अध्याय : 2

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में विभिन्न मनोविकार

अध्याय : 2

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में विभिन्न मनोविकार

भूमिका

मनोविज्ञान मानव मन का अध्ययन करनेवाला एक आधुनिक विज्ञान है। मानव मन बड़ा ही जटिल है। मानव मन में मुख्यतया सुख और दुख की अनुभूति के कारण विविध प्रकार के भाव या मनोविकार उद्‌भूत होते हैं। मानव में जो मूलभूत प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं उनमें मानव मन के मनोविकार किसी न किसी रूप में संवेग की सहायता से प्रासंगिक रूप में प्रकट होते रहते हैं। एक ही मानव में चाहे वह पुरूष हो, स्त्री हो या बालक उसमें विविध प्रकार के मनोविकार दिखायी देते हैं। मनोविज्ञान के अध्ययन में मानव मन के विभिन्न मनोविकारों का एक तरह से अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध के अध्ययन में विष्णु प्रभाकर लिखित तीन मनोवैज्ञानिक नाटकों - "डॉक्टर", "टगर" और "बन्दिनी" में अभिव्यक्त विभिन्न मनोविकारों का नाटकों में प्रयुक्त स्त्री-पुरूष पात्रों के सम्बन्ध में विवेचन-विश्लेषण करना हमारा मुख्य प्रतिपाद्य है।

प्रेम

प्रेम बहुत ही जटिल संवेग है। व्यक्ति के जीवन में प्रेम का पथ कई मोड़ लेता है। नायक और नायिका के हृदय में एक दूसरे के प्रति प्रेम होता है। एकांत, कुंज नदी-तट, सरोवर, चाँदनी रात, शीतल पवन, भ्रमर, पक्षियों का कुंजन, जोस्ना आदि के कारण प्रेम उद्‌दिप्त होता है। स्पर्श, अलिंगन, उत्सुकता से देखना, मुस्कान, रोमांच, स्वर भंग आदि क्रियाओं से प्रेम प्रदर्शित होता है। मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य मे साहित्य के अन्तर्गत प्रेम एक महत्त्वपूर्ण स्थायी भाव है जो मानव में अन्तर्बाह्य विद्यमान रहता है।

1· **डॉ·अनीला के प्रति प्रेम**

सईदा "डॉक्टर" नाटक में डॉ·अनीला की सहयोगी डॉक्टर है। वह अस्पताल में आये हुए हर व्यक्ति से प्रेम से बर्ताव करती है। डॉक्टर अनीला अस्पताल में नहीं हैं, फिर भी वह नयी मरीजा की प्यार से देखभाल करती है। वह कर्तव्य परायण है। वह अनीला से प्यार करती है तभी तो अनीला के पीछे अनीला के बारे में किसीको बोलने नही देती। अनीला अस्पताल में आते ही मरीजा को देखना चाहती है तब सईदा उसे रोकना चाहती है लेकिन वह न रूकते हुए मरीजा को देखने जाती है। प्रेम के कारण ही अस्पताल में एक बार मरीजा को दाखिल करने के बाद उसे लौट जाने के लिए नहीं कह सकती है। अनीला उपर से जितनी हसती है अन्दर से उतनी ही उबलती है यह बात भी प्रेम के कारण ही सईदा जान पाती है। अनीला की जो मानसिक हालत है उससे अनीला का अस्पताल से दूर रहना ही अच्छा है यह बात भी सईदा अनीला के प्रति प्रेम के कारण ही जान सकती है। "तो आखिर दीदी चली ही गई। अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ जो चली गई। उन्हें बहुत पहले चला जाना था।"[2]

"डॉक्टर" नाटक में केशव डॉ·अनीला का सहयोगी डॉक्टर है। केशव एक कुशल एन्सर्थेटिस्ट है। उसकी आँखों से ही स्नेह छलकता है। डॉक्टर अनीला का मनोविश्लेषण करने के लिए केशव का पात्र जरूरी है। डॉ·केशव अनीला की मानसिक अवस्था को अच्छी तरह जानता है। केशव अनीला से प्यार करता है। पर अनीला कभी अपने दुख से बाहर आने की कोशिश ही नहीं करती। पांच वर्ष से केशव अनीला को जानता है। अनीला कितनी तड़पती है, उसके मन में केसा संघर्ष चल रहा है, केसा तूफान उठ रहा है ये सब बाते केशव जानता है।

मरीजा को लेकर अनीला परेशान है और केशव की सहायता की अपेक्षा करती है तब केशव उसे समझाता है -

केशव : (दृढ) मेरी सहायता चाहती हो ?

अनीला : (पूर्वतः) हां केशव, तुम्हारी सहायता चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि····

केशव : (एकदम पास आकर) न जाने कब से कह रहा हूँ पर तुम हो कि····

अनीता : क्या···क्या मतलब ?

केशव : (मुस्कराता है) मतलब भी बताना होगा। नहीं अनी, उसे कह न सकूंगा। (प्यार से) अनी·····

अनीता : (चौककर) केशव! वह···वह बात नहीं····

केशव जानता है कि अनीला टूट चुकी है। हालत से मुकाबला नहीं कर सकती। तभी तो वह उसे सहारा देना चाहता है। अनीला को हाथ देकर उठाना चाहता है। पर अनीला जन-भीती के कारण उसके प्यार को स्वीकार नहीं सकती।

"डॉक्टर" नाटक में काकी डॉ॰अनीला की सेविका है। काकी की उम्र 60 साल की होने के कारण अनीला के साथ दिर्घ काल तक रह चुकी है। इस साहचर्य के कारण काकी के मन में अनीला के प्रति प्रेम है। काकी अनीला की तबीयत का हर वक्त खयाल करती रहती है। अनीला अपना सारा वक्त अस्पताल में ही गवाँ देती है अपनी तबीयता का ख्याल नहीं करती यही उसकी शिकायत है - "जब देखो नई मरीजा के पास, जब देखो नई मरीजा की चर्चा! तुम जानो सात दिन से उसके पीछे पागल है।"[4]

अनीला हर वक्त मरीजा का ख्याला रखती है और मरीजा का बेटा हर वक्त अनीला के पीछे रहता है और अनीला गोपाल को टाल नहीं सकती इसीलिए काकी अनीला की शिकायत दादा से करती है - "···तुम जानो दादा, उसके आते ही उसके साथ होले। बडा प्यार है उससे मका।"[5] इस तरह काकी अनीला के प्रति प्रेम की वजह से उसकी चिंता करती रहती है।

अनीला की तबीयत खराब हो जाती है तब काकी घबरा जाती है। अनीला पेट में दर्द होने के कारण काकी से सेकने के लिए पानी माँगती है तब काकी उस गोपाल के बारे में शिकायत करती है वह भी प्रेम के कारण - "(जाती-जाती) हां, हां, आ न। तुम जाने सिर सहलए भी कई दिन हो गए। जरा और साजी होगा। और दिके वहछोरा आया तो उठके चल न देना। मका तुम जानो हां····"6

अनीला पर प्यार होने के कारण ही काकी गोपाल से नफरत करती है। शशी के बारे में अनीला को तार आता है तब भी काकी शशी पर प्यार होने के कारण शशी गिर पडी यह सुनकर घबरा जाती है - "क्या हुआ शशि को, बेट्टी। तुम जानो क्या हुआ बता तो।"[7] इसमें संदेह नहीं की बूढ़ी सेविका काकी अनीला के प्रति अपना सात्विक प्रेम बार-बार प्रकट करती रहती है।

2· बीबी और बच्चों के प्रति प्रेम

"डॉक्टर" नाटक का गौण पात्र सतीशचन्द्र शर्मा जो कभी डॉक्टर अनीला का पति था। वह भी अपने बीबी बच्चों से प्रेम करता है यह बात उसके खत से दिखायी देती है। अपनी दूसरी पत्नी नयी मरीजा को वह संजोग से ही डॉ·अनीला के अस्पताल में भर्ती करता है पर उसे यह मालूम नहीं है की यहाँ की डॉक्टर ही अपनी पहली बीबी मधुलक्ष्मी है वह डॉक्टर अनीला के नाम एक खत भेजता है - जिसमें उसका प्रेम प्रकट होता है - "···कहने को मैं एक बहुत बड़ा अफर हूँ, पर वास्तव में एक अदना इन्सान हूं, वह इन्सान जो अपने बीबी-बच्चों को प्यार करता है, बेइन्तहां प्यार करता है। मेरी बीबी आपके नर्सिंग होम में है, आपकी शरण में है।····उसका बचना मेरा बचना है, मेरे बच्चो का बचना है।····मेरा सबकुछ उस पर न्यौहतवर है। वह बच गई तो मैं भीख माँगर भी गुजारा कर लूंगा।"[8] इस खत से यही सिद्ध होता है की सतीशचन्द्र शर्मा अपने बीबी बच्चों पर बेइन्तहां प्यार करता है।

3· पत्नी का पति के प्रति आंतरिक प्रेम

"टगर" इस नाटक में हम देखते हैं कि "टगर" नाम का पात्र जो स्वच्छंदी पात्र के रूप में हमारे सामने आती है। वह ठाकुर के साथ खुले आम प्यार करती हुई दिखायी देती है। अपने सौंदर्य का, प्यार का, मादकता का प्रदर्शन करती हुई दिखायी देती है। उसके बाद माथुर के साथ भी वह प्यार का नाटक करती है। दोनों को भी 'मैं सिर्फ तुमसे ही प्यार करती हूँ' ऐसा ही कहती है। उसके इस बर्ताव से हमें लगता है कि टगर एक स्वच्छन्द नारी है। पर नाटक

के अंत में ऐसा नहीं लगता।

टगर एक अनपढ़ स्त्री होने के कारण उसके पति शेखर ने उसे त्याग दिया है। टगर एक सीधी भोली रश्मिप्रभा से टगर बन गयी है। उसके पति शेखर ने ही उसे क्या से क्या बना दिया है। पर फिर भी हम देखते हैं कि नाटक के अंत में टगर नाजिम से कहती है कि वह अब भी पति से प्यार ही करती है। "...उस दिन मैंने स्पष्ट नहीं कहा था लेकिन आज कहती हूँ कि मैं शेखर को निरन्तर प्यार करती रही हूँ।..."[9] यहाँ हम देखते हैं टगर का यह प्रेम आन्तरिक प्रेम है। पति उसके सामने आने पर भी वह अपना प्रेम प्रकट नहीं करती है।

4· **पति-पत्नी प्रेम**

"बन्दिनी" नाटक की उमा नायिका है। उमा एक अल्लड किशोरी है। जो नवविवाहिता है। सुरेन्द्र उसका पति है। उमा अपने पति सुरेन्द्र से बेइन्तहां प्यार करती है। सुरेन्द्र जात्रा देखने जाता है तो उमा उसके इन्तजार में रात-रात भर जागती है। सुरेन्द्र से बिछडकर एक पल भी रहना नहीं चाहती। सुरेन्द्र की बाहों में उसे सारा सुख मिलता है। वह सुरेन्द्र से कहती है - "मुझे तो ऐसा लगता है जैसे हम सदा एक थे, हैं, और एक रहेंगे।"[10] सुरेन्द्र नौकरी के लिए घर छोडकर शहर जाना चाहता है तो उससे बिछडने के डर से उमा व्यथित होती है और कहती है "जी करना है इसी तरह तुम्हारे वक्ष में मुँह छिपाकर सारे दिन प्रेम का कलकल नाद सुनती रहूँ।"[11] आम्रकुंज, श्रीहीन होता चन्द्रमा आदि बाते इस प्यार को रंग देते हैं।

कालीनाथ राय जब उमा को देवी मानकर पूजा गृह में रखते हैं तब उमा सुरेन्द्र के लिए तड़पती रहती है। उसीके इन्तजार में तीन दिन तक खाना भी नहीं खाती। और अपने पति के साथ ही हमेशा के लिए रहना चाहती है। इतना ही नहीं सुरेन्द्र से बिछडने के डर से भी वह सुरेन्द्र के साथ भाग जाना तक चाहती है। कालीनाथ राय की जिद के आगे उसकी एक नही चलती। रात

के बढ़ जाने से उसका डर भी बढ़ता है जब सुरेन्द्र चुप के से उससे मिल आता है तो उससे बिछडना नहीं चाहती। काँपती हुई उमा सुरेन्द्र से कहती है - "नहीं नहीं, अभी मत जाओ। अभी बहुत रात बाकी है। उधर देखो, नदी के तल पर चांद कितना प्यारा लग रहा है।"[12] उस समय उस चाँदनी रात में वह उससे लिपट जाती है और पति-पत्नी प्रेम उभर आता है। उमा सुरेन्द्र के बिना अपने जीवन में अकेलापन, खालीपन महसूस करती है इसी कारण उससे जुदा नहीं होना चाहती।

सुरेन्द्र कालीनाथ राय का बेटा और उमा का पति है। उमा को चाहता है। उमा के इर्द-गिर्द घूमते रहता है। सुरेन्द्र जात्रा देखने जाता है तो उमा राह देखती होगी इस खयाल से जात्रा बीच में छोकर चला आता है1 उमा ठंड से सिकुड़ जाती है तो उस पर रजाई ओढ़ देता है। उमा को चूम लेता है। उमा के मुँह से प्यार की बाते सुनते उसे अच्छा लगता है। उमा से बिछडकर रहना ही नहीं चाहता। रात के सिर्फ कुछ घन्टो से वह खुश नहीं। वह कहता है, "पर उमा, मैं तो इतना ही जानता हूँ कि अब मैं क्षण भर के लिए भी तुमसे जूदा नहीं रह सकता। रहना भी नहीं चाहता यही चाहता हूँ कि तुम, हो, मैं हूँ और···।"[13]

सुरेन्द्र उमा को अपनी बाहों में समेट लेता है। उन दोनों के प्यार में कोई तीसरा भी नाहीं आए, यही सुरेन्द्र की इच्छा है। उमा उससे दूर होना भी चाहती है तो सुरेन्द्र उसे खींच लेता है। वे दोनों कितनी ही देर तक एक दूसरे की आँखों मे देखते रहते हैं। आम्रकुंज, रात की चांदनी और उस चंदा की चांदनी में सुरेन्द्र उमा कोदेखते रचना चाहता है। उमा उठकर कमरे से बाहर जाना चाहती है पर सुरेन्द्र खिडकी बन्द कर लेता है। उमा को प्यार से सहलाते हुए कहता है - "मैं तुम्हें पूरी तरह पाना चाहता हूं, आधे-अधूरे मन से नहीं।"[14]

इतने बड़े घर में सुरेन्द्र दिन भर उमा के साथ बाते भी नहीं कर सकता है। तो उमा को देखने के लिए तड़प उठता है। इसी कारण वह शहर जाकर उमा के साथ रहना चाहता है। दिन रात उसीके साथ बिताना चाहता है। कालीनाथ

राय उमा को देवी बनाकर पूजागृह में डालते हैं तब भी सुरेन्द्र पिताजी की पर्वा किए बिना रात के अन्धेरे में उमा से मिलने आता है। उसे आँखों में भर लेता है और प्यार से थपथपाता है। उसे वहाँ से सात दिन में ले जाने का वादा करता है1

5· **जेठानी-देवरानी प्रेम**

"बन्दिनी" नाटक में कालिनाथ राय की बडी बहू सावित्री है और छोटी बहू उमा है। सावित्री और उमा उन दोनों का एक दूसरे पर बहुत प्यार है। सावित्री का बेटा अनु है तो उमा के साथ ही हँसता खेलता रहता है। उमा के साथ ही सोता है। उमा अनु की प्यार भरी शिकायते सावित्री से कहती है और अनु को लेकर जेठानी और देवरानी दोनों खिल खिलाकर हँसती हैं।

कालीनाथ राय उमा को देवी मानकर पूजा घर में बंद कर देते हैं तब भी उमा सावित्री को देखकर रोने लगती है। जीजी मुझे यहाँ से बाहर निकालो नहीं तो मैं मर जाऊंगी ऐसी बाते करती है तो सावित्री को दुःख होता है। वह कहती है, तू खाना-पीना मत छोड और इस तरह अपने आपको मत मार कोई न कोई रास्ता निकलेगा। उसे धीरज की बाते कहती है। उमा के पास जाकर सावित्री कहती है - "पगली मैं तेरी माँ जैसी हूँ, जब तू इस आंगन में छोटी बहू बनकर आई थी तो तुझे मैंने गोद में उठा लिया था। तुझे मरने दे सकती हूं ....(धीरे से) हो सकता है वह आज ही आ जाए।"[15]

इस वार्तालाप से सावित्री और उमा एक दूसरे से प्यार करती हैं। एक दूसरे के सुख दुख मे साथ निभाती है यही दिखायी देता है।

6· **छदम प्रेम**

"टगर" नाटक में टगर का प्रेम जो है वह छद्म प्रेम हैं। वह अपने जीवन में आनेवाले पुरूषों के साथ प्रेम करने का नाटक करती हैं। वास्तव में वह पुरूष जाति का बदला लेना चाहती है। पर पुरूषों को अपने जाल में फसाने के लिए टगर ठाकुर, माथुर और नाजिम के साथ प्यार का नाटक करती है।

ठाकुर एक साठ साल का बूढ़ा होने पर भी टगर उससे प्यार करती है। टगर की उम्रता 25 साल की है। यह प्यार कैसे हो सकता है ? यह तो प्यार का नाटक है। टगर का हर वक्त सुंदर रहनें का प्रयत्न करना, मिठी बाते करके पुरूषों को लुभाना, माथुर से टगर कहती है कि मैं ज़रा ठाकुर के सिर पर तेल मल दूं ? यहाँ वास्तव में प्यार का नाटक है। टगर का माथुर से कहना कि, 'मैं सिर्फ तुमसे प्यार करती हूँ ?' इतना ही नही वह माथुर से कहती है, " तुम नहीं जानते, अब तक तो मैं भटकती ही रही हूं। मन का मीत तो अब मिला है।"[16] यहाँ हम देखते हैं कि ठाकुर के साथ प्यार का नाटक करके उसे मेजर पुरी के जरिये मार डालने के बाद माथुर से भी छद्म प्रेम करके टगर नाजिम के पास जाती है। नाजिम के साथ भी वह बिना शादी के रहकर उसे अपने जाल में फँसा लेती है। नाटक के अन्त में भी वह कहती है कि उसने हर एक के साथ प्यार का नाटक किया है, जासूसी की है। यहाँ पर कहा जा सकता है कि अपनी प्रतिशोध की पूर्ति के लिए टगर ने माथुर, ठाकुर और नाजिम के साथ छद्म प्रेम किया है।

ठाकुर और माथुर का प्रेम भी छद्म प्रेम ही है। ठाकुर अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए टगर के साथ प्यार का नाटक करता दिखायी देता है। ठाकुर वास्तव में एक आन्तर्राष्ट्रीय तसकर है, स्मग्लर है। लोक-गीतों का तो उसका बहाना है। यह सब बुरी बाते छिपि रहने के लिए टगर के सौंदर्य का फायदा उठाना यही ठाकुर का मकसद है इसीलिए ठाकुर ने टगर को अपने पास रख लिया है।

माथुर का टगर के प्रति प्रेम भी छद्म प्रेम ही है। माथुर भी रिश्वतखोर अधिकारी है। ठेकेदारी के मामले मे वह रिश्वत लेता रहता है। इस मामले में बड़े अधिकारियों को खुश करने के लिए टगर जैसी सौंदर्यवती का सहारा लेना चाहता है। माथुर अपना तबादला मंसूख करने के लिए भी टगर का उपयोग कर लेता है। यहाँ टगर के प्रति माथुर का प्यार भी एक छल ही है। छद्म-प्रेम ही दिखायी देता है। माथुर के शब्दों में प्यार किया नहीं जाता, कराया जाता है और दो लाख के तोहफे से तो टगर अवश्य प्यार करेगी। और इसी खयाल के कारण माथुर

टगर से प्यार का नाटक करता रहता है।

7· राष्ट्र-प्रेम

"टगर" इस नाटक में हम देखते हैं कि मेजर पुरी के मन में अपने कर्तव्य के प्रति तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम दिखायी देता है। ठाकुर माथुर जैसे देशद्रोहियों को पकड़वाने के लिए मेजर पुरी एक षड़यंत्र रचते हैं। टगर ठाकुर को प्यार के जरिए अपने जाल में खींच लेती है। ठाकुर एक देशद्रोही, स्मग्लर है यह जब मालूम हो जाता है तो वह यह खबर मेजर पुरी को देती रहती है।

मेजर पुरी भी ठाकुर एक स्मग्लर होने के बाद भी अपनी जान को हथेली पर लेकर भी जान की पर्वा न करके ठाकुर के साथ तस्कर व्यापार कैसे पनपता है, यह दिखाने के लिए ले जाते हैं। जहाँ ठाकुर उनसे मुकाबला करता है और उसमें मेजर पुरी की गोली से ठाकुर मारे जाते हैं। उसके बाद भी मेजर पुरी इसी तरह टगर के जरिए माथुर की भी रिश्वतखोरी की जानकारी पाते हैं। माथुर ने कुसुम को आत्महत्या करने के लिए बाध्य किया था। यह मालूम होने के बाद मेजर पुरी माथुर को भी गिरफ्तार करते हैं। यहां मेजर पुरी का राष्ट्रप्रेम ही दिखायी देता है।

टगर यह पात्र भी मेजन पुरी की मदद करती हुई दिखायी देती है। एक परित्यक्ता नारी होकर भी अपनी हीन भावना को लेकर भी राष्ट्र के प्रति कुछ अच्छा करने की भावना ही उसके मन में है जो वह ठाकुर और माथुर जैसे लागों को सजा देने के लिए प्रवृत्त करती है। टगर का भी यहाँ राष्ट्र के प्रति प्रेम ही दिखायी देता है।

8· प्रकृति-प्रेम

"टगर" इस नाटक में ठाकुर इस पात्र के माध्यम से बार-बार प्रकृति का प्रेम दिखायी देता है। प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन दिखायी देता है। ठाकुर व्यक्ति ही रसिक वृत्ति का व्यक्ति है। उसके मन में प्रकृति के प्रति अनन्य साधारण प्रेम है। एक 50 साल का बुढ़ा होने पर भी उसे अब भी प्रकृति में सौंदर्य नजर

आता है। "इस राजस्थानी नहर के किनारे-किनारे कितना सुरम्य दृश्य है। दूर क्षितिज तक फैले हुए खेत, बीच-बीच में शान्त अलसाए गाँव, प्रकृति की पलके जैसे बोझिल हो उठी हो। तब हृदय न जाने क्या चाहने लगता है।[17] यहाँ ठाकुर की सौंदर्य दृष्टि दिखायी देती है। यह टगर के प्रति उसके मन में काम भावना का भी भाव छिपा है। उसके बाद रात्री का वर्णन भी इसी तरह दिखायी देता है - "...पर आज तो पूर्णिमा है। सारी रात चाँदनी छिटकेगी। लेकिन तुम उदास क्यों हो गयी ? मैंने तो मजाक किया था। न...न....मुस्कुराओ...। तुम मुस्कुराती हो तो चमेली की कलियाँ महक उठती है..."[18] टगर इस नाटक में ठाकुर का मन प्रकृति में ही व्यक्त होता दिखायी देता है।

वात्सल्य

माता-पिता का अपने पुत्रादि पर जो नैसर्गिक स्नेह होता है, उसे वात्सल्य कहते हैं।[19] वात्सल्य बालक या शिशु पर किया जाता है। बालक कि तोतली बोली, गिरने-पड़ने की क्रियाएँ, हट करना, उसके कार्य, उसकी शूरता आदि से वात्सल्य उत्पन्न होता है। उसके साथ हँसना, पुलकित होना, एक टक देखना, चूमना, गोद में लेना, पालने में झूलाना, बातें करना, अलिंगन करना, नेत्राकुंचन करना आदि क्रियाओं से वात्सल्य प्रदर्शित होता है। चिन्ता, मोह, विषाद, हर्ष, स्नेह, गर्व, स्मृति, औत्सुक्य आदि कारणों से वात्सल्य निर्माण होता है।

अनीला वात्सल्य की मूरत है। सतीशचन्द्र ने उसका त्याग किया है। फिर भी उसने अपनी बेटी शशि को अपने पास रखा है। पढ़ लिखकर डाक्टर होने के बाद उसीके अस्पताल में सतीशचन्द्र शर्मा अपनी बीबी को लाता है। तो सौत का बेटा गोपाल अनीला से मिलने आता है। तब अनीला उसके साथ प्यार से बातें करती है। गोपाल कहता है, "पापा के अनुसार दीदी बहुत बड़ी डॉक्टर है। उस समय डॉ॰अनीला हँसकर गोपाल से पूछती है - "तुम्हारा क्या ख्याल है ? कुछ बड़ी दिखाई देती हूँ ?[20] गोपाल की बच्चों जैसी तुतली बोली सुनकर अनीला के मन में वात्सल्य पैदा होता है। गोपाल की बाते करा, उठना-बैठना, ये सब क्रियाएँ अनीला को अच्छी लगती हैं। गोपाल की चंचलता अनीला को आकृष्ट करती

हैं।

बाद में अनीला को मालूम होता है कि गोपाल नयी मरीजा सौत का बेटा है। तब अनीला उससे मिलना पसन्द नहीं करती, मरीजा को भी देखना नहीं चाहती। मरीजा को दौरा पड़ता है और गोपाल अनीला को बुलाने आता है। अनीला नहीं जाना चाहती तो गोपाल रोने लगता है। उसके रोने से अनीला का मन पसीजता है। वह उसीको साथ लिए तेजी से गोपाल का हाथ पकड़े निकली चली जाती है।

अनीला की बेटी शशि जो दूसरे गांव में रहती है, वह गिर पड़ती है और उसकी टांग टूट जाती है। इस सिलसिले में केशव का तार आता है तब भी अनीला में वात्सल्य दिखायी देता है। डॉ॰अनीला एकदम कहती है - "शशि··· शशि को क्या हुआ ? तेजी से तार पढ़ती है पैर फिसल जाने के कारण शशि गिर पडी। दाहिने पैर की हड्डी टूट गई। प्लास्टर हो गया है। चिन्ता की कोई बात नहीं, मैं आ रहा हूँ। (बैठकर) हड्डी टूट गई। ओह···।"[21] अपनी बच्ची को कुछ हो गया है यह सुनकर अनीला अपने आप पर काबू नहीं पा सकती।

मरीजा का ऑपरेशन करने के बाद भी वह ऑपरेशन थिएटर से बाहर आने के बाद पहले दादा से कहती है कि उसे अभी शारी के पास जाना है। शशि बीमार है यह जानकर वह स्वस्थ नहीं रह पाती। शशि से दूर रहकर डॉ॰अनीला और ही व्याकुल हो उठती है।

इस तरह हम देखते हैं डॉ॰अनीला, गोपाल और शशि के प्रति माता के रूप में अपना वात्सल्य प्रकट करती है, यद्यपि गोपाल उसकी सौत का बेटा है।

सरदार वारियामसिंह "टगर" नाटक का एक गौण पात्र है। वारियामसिंह "टगर" से बेटी की तरह प्यार करते हैं। वारियामसिंह 70 साल के बुढ़े हैं। वे निस्संतान हैं। टगर एक बहादूर बेटी है इसीलिए वे टगर से प्यार करते हैं। टगर देशद्रोहियों का पर्दाफाश करने में पुरी साहब को मदद करती है। इसी बात पर सरदार वारियामसिंह को गर्व है। टगर को बेटी से भी जादा प्यार करते हैं इस

प्यार का प्रतिक एक दरी इसी बहादुरी के कारण वारियामसिंह टगर को उपहार स्वरूप देते हैं और आशीर्वाद देते हैं - "(सिरपर हाथ रखते हैं) बेटी, मुझे जरूरी काम से जाना है। वाह गुरू तुम पर कृपा करे। हमारे धन्य भाग जो तुम जैसी बहादूर बेटी यहां आयी। (दरी आगे बढाकर) यह दरी तुम्हारी काकी ने अपने हाथ से बुनी है तुम्हारे लिए।"[22] टगर एक परित्यक्ता नारी है। उसे घर-बार कुछ नहीं है। उसका जीवन खालीपन से भरा पड़ा है। सरदार वारियामसिंह से वात्सल्य पाकर टगर उन्हें पूछती है कि बेटी के नाते कभी आपके घर आ सकती हूँ क्या ? तब वारियामसिहं कहते हैं, - (अल्पविराम) "बेटी के लिए मैके का दरवाजा एक दिन बन्द हो जाता है तो फिर नहीं खुलता। यह रिवाज है। (अल्पविराम) पर रिवाज तोड़े भी तो जाते हैं।"[23]

इसमें संदेह नहीं कि एक परित्यक्ता नारी के प्रति सहानुभूतिपरक दृष्टिकोण रखकर, युवा नारी के प्रति समानता की तरह मानना एक विशिष्ट मानसिकता है। परित्यक्ता नारी के प्रति सरदारजी के मन में अपार श्रध्दा और आस्था है। इसी गर्व के कारण ऐसी युवतियों के लिए सरदारजी के घर के दरवाजे रात-दिन खुले रहते हैं। सरदारजी का यही श्रध्दा भाव यहाँ दिखायी देता है। तो पुराने जमाने के होकर भी नये खयालात को अपनाने वाले हैं। वक्त के साथ अपने खयालता को बदलते नजर आते हैं। टगर के प्रति वात्सल्य होने के कारण ही वे रिवाजों को तोड़ने में भी हिचकिचाते नहीं। इसमें सरदारजी नये विचारों के संवाहक लगते हैं।

"बन्दिनी" नाटक की नायिका उमा में वात्सल्य भाव पाया जाता है। उमा खुद माँ नहीं बनी है। पर बड़ी देवरानी का बेटा अनु से वह बेहद प्यार करती है। अपने बेटे से ज्यादा उसे चाहती है जैसे अनु सावित्री का बेटा न होकर खुद उसका ही हो। नाटक के आरम्भ में ही अनु उमा की चाबियाँ लेकर भाग जाता है, छिपता है, उमा उसके पिछे भागती है1 "अनु, अनु, कहां छिप गया शैतान। देख, मेरी चाबियां दे दे। एक भी खो गई तो आफत आ जाएगी। अनु बड़ा अच्छा है। बडा भला भी है। राजा बेटा, अब निकल आ।"[24] अनु से चाबियां

पाने के लिए उससे मिन्नते करती नजर आती है जिससे उसमें वात्सल्य भाव नजर आता है।

कालीनाथ राय के यहाँ प्रीतिभोज होनेवाला है। सारे गांव के लोक इकट्ठा होने वाले हैं। घर की व्यवस्था अब उमा और सावित्री के हाथ में है। तब उमा अनु से ये बाते कहती है अनु प्रीतिभोज की मिठाइयों से क्या क्या खाना पसन्द करेगा इसके बारे में पूछना चाहती है। उमा का अनु को उठाकर लेना, उसे चूमना ये सब क्रियाएँ वात्सल्य भाव का ही प्रतीक है।

उमा जब देवी माँ बनने के बाद अनु को अपने पास आने नहीं देती तब अनु उसे पुकारते-पुकारते मरणासन्न हो जाता है। तब पुरोहित सावित्री द्वारा अनु को उमा की गोद में रख देते हैं तब भी अनु को अपनी गोदी में पाकर उसके मन में वात्सल्य उभरता है। उसके मुख पर वात्सल्य दिखाई देता हैं।

सुरेन्द्र कालीनाथ राय का छोटा बेटा है। सुरेन्द्र की अपनी औलाद नहीं है पर वह अपने भाई उपेन्द्र के बेटे से बहोत प्यार करता है। कालीनाथ राय के यहाँ "प्रीतिभोज" होनेवाला है। आस-पास के गाव के लोग "प्रीतिभोज" में शामिल होने आने वाले हैं। तब घर में मिठाइयाँ भी बनायी जायेगी। सुरेन्द्र भी अपने प्यारे अनु से पूछना चाहता है कि उसे कौनसी मिठाइयाँ खाना पसन्द हैं? जिससे वात्सल्य भाव पनपता है। सुरेन्द्र अनु को जात्रा दिखाने ले जाता है, घूमने ले जाता है, उसके साथ हँसता है, खेलता है, जिनसे वात्सल्य प्रकट होता है।

उमा अपने आपको देवी समझकर अनु के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करती। उसे अपने पास नहीं आने देती। तब भी सुरेन्द्र अनु के प्यार के खातिर ही कालीनाथ राय, उमा, तथा अन्धश्रध्दा का सहारा लेने वाले लोगों से संघर्ष करता दिखायी देता है। उमा और कालीनाथ राय को भला-बुरा कहता है। इसका कारण भी वात्सल्य ही है। अनु के प्रति वात्सल्य होने के कारण ही अनु काअहित नहीं देख सकता। अनु के प्रति वात्सल्य होने के कारण ही वह डर जाता है। अपने पिताजी से वह कहता है - "पिताजी ! अनु का ज्वर बराबर बढ़ता ही जाता है। यदि वैद्यजी

ने उेस न देखा तो मुझे डर है·····"[25]

सावित्री अनु की माँ है। वह अपने बेटे अनु को बहुत प्यार करती है। अनु का बाते करना, हँसना, सताना सब उसे अच्छा लगता है। कालीनाथ के घर में प्रीतिभोज की तेयारियाँ हो रही है तब घर में काम-ही-काम है। अनु की तरफ ध्यान देने के लिए सावित्री को फूर्सद नहीं मिलती पर जब उसे काम से फूर्सद मिलती है तो पहले उसे अनु की याद आती है। अनु को कहीं न पाकर वह घबरा जाती है। सावित्री व्यस्त भाव हो जाती है और अपने पति उपेन्द्र से पूछती है कि क्या तुमने अनु को देखा है। सावित्री को लगता है अनु हर वक्त उसके सामने रहना चाहिए। उमा और सुरेन्द्र अपने अनु से प्यार करते हैं, यह देखकर सावित्री को सुख होता है।

उमा अपने आपको देवी मानकर अनु को अपने पास नहीं आने देती तो उमा को दुःख होता है वह बार-बार उमा से इस बात की शिकायत करती है। उमा को ये भी बताती है कि अनु तुम्हारे लिए पागल हो रहा है, पर उसके पिताजी आने ही नहीं दे रहे थे। उसने बहुत जिद की तो चांटा मार दिया उन्होंने। अनु को मार दिया जाता है तो वात्सल्य भाव के कारण सावित्री को चोट पहुँचती है। अनु ज्वर से तड़पता है तब भी सावित्री वात्सल्य के कारण ही अपने बेटे को बिना दवा के तड़पते देखना नहीं चाहती। वह कहती है - "···अपने बेटे को तुम्हारी दया पर नहीं छोड़ सकती। मैं यही कहने आयी थी। तुम इतनी कठोर हो सकती हो कि अपने पति को लौट जाने दो। लेकिन मैं माँ हूं, अपने बेटे को नही जाने दूंगी····।"[26]

वात्सल्य के कारण घर के सब लोगो से वह होड़ लेती है। उमा से, लेती है। उमा से, ससुर कालीनाथ राय से वह संघर्ष करती दिखायी देती है। अनु के प्रति वात्सल्य के कारण वह पागलों जैसी अपनी अवस्था कर लेती है। तड़पति है, बिबसती है, रोती है, चिखती है। ये सब बाते अनु के प्रति वात्सल्य के कारण होती है।

उत्साह

साहसपूर्ण आनन्द की उमग्न का नाम उत्साह है। कर्म सौंदर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं। उत्साह में शारीरिक कष्ट सहने की ताकत होती है। उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। "किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निन्दा, स्तुति, मान-अपमान आदि की कुछ परवा न करके प्रचलित प्रथाओं का उत्लंघन करनेवाला वीर या उत्साही कहलाते हैं।"[27] किसी को देखकर उठ खड़े होना, आगे बढ़ना, उत्साह कहलायेगा। गर्वसूचक वाक्य, रोमांच, उत्तेजित होना, बाहों का धुडकना, उछलना आदि अनुभावों से उत्साह प्रदर्शित होता है। हर्ष, सत्कार, संतोष, आनन्दानुभूति, धर्माचरण, धर्म हेतु, कष्ट सहना आदि अनुभावों से भी उत्साह प्रकट होता है।

1· **अस्पताल के प्रति**

"डॉक्टर" नाटक के नारी पात्र डॉ·अनीला में कर्तव्य के प्रति उत्साह दिखायी देता है। अनीला हर वक्त अस्पताल के बारे में विचार करती रहती है। रात-दिन मरीजों की सेवा करती है। अनीला के बिना अस्पताल खाली लगता है। सब उससे प्यार करते हैं।

अनीला कितनी भी थकी हुई क्यों न हो अस्पताल में आते ही पहले मरीजों को देखने जाती है। अपने कर्तव्य में ही उसे आनन्द मिलता है। बड़े लोगों का आदर करती है। दादा को देखते ही - "दादा" कहकर उनके आगे बढ़कर पैर छूती है।

अनीला के उत्साह में अच्छे गुण दिखायी देते हैं। इस तरह वह अपना उत्साह दिखाती है। कर्तव्यपालन धर्माचरण के हेतु वह कष्ट सहती रहती है। एक छोटी बच्ची के सहारे अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है। धर्माचरण के अनुसार स्त्री दूसरी शादी नहीं कर सकती तो अनीला भी इस आचरण का पालन करती है। केशव के प्रेम के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती। अपने कर्तव्य के साहस में ही प्रेम पाना चाहती है। एक परित्यक्ता नारी में मरीजों को जीवदान देनेवाली

संजीवन बनकर उत्साहपूर्ण जीवन जीना चाहती है। अपने कर्तव्य पर दृष्टि रखकर जीवन व्यतीत करती है। इसीलिए तो वह सबका आदर पाती है। सब उनसे बेहद प्यार करते हैं। मरीजा का ऑपरेशन करके जीवनदान देना उसकी कर्तव्यनिष्ठा और उत्साह वर्धकता का ही द्योतक है।

2· अधिकार के प्रति

"टगर" इस नाटक में मेजर पुरी एक साहसी कर्तव्य परायण मेजर हैं। एक कर्तव्य परायण अधिकारी होने के नाते मेजर पुरी उत्साही व्यक्ति है। देश के प्रति श्रध्दा रखनेवाला, देशद्रोहियों को ढूँढ निकालनेवाला अधिकारी है। समाज को खोखला करनेवाले दरिन्दों को पकड़ने के लिए षड़यंत्र रचता है। इस षड़यंत्र में टगर जैसी बहादूर लड़की को अपने साथ लेता है। लेकिन अपने इस षड़यंत्र का पता भी किसको लगने नहीं देता। सीमावर्ती प्रदेश में तस्कर व्यापारियों ने जो धूम मचायी है, उन गद्दारों को ढूँढना यही मेजर पुरी का मकसद है। शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर मान-अपमान, निंदा-स्तुति सब सहने की ताकत उसमें है। भ्रष्टाचार को रोकना चाहते हैं पर देश में मौजूद कुछ ही अच्छे लोगों से यह काम नहीं हो सकता। यही दुख उनके मन में है। मेजर पुरी जानबूझकर ठाकुर को सीमा प्रदेश दिखाने ले जाते हैं। पुरी ठाकुर से कहते हैं - तो आइये। मैं आपको बताऊंगा कि सीमा क्या होती है और तस्कर व्यापार कैसे पनपता है। यह एक षड़यंत्र का ही भाग है।

मेजर पुरी ठाकुर साहब को अपनी गोली का निशाना बनाते हैं। देश के गद्दार को सजा दिलवाके रहते हैं। पुरी कहते हैं - मुझे अफसास है कि वे किसी तस्कर की गोली से नहीं, मेरी गोली से मारे गये हैं। मेजर पुरी अपने कर्तव्य के मार्ग पर आनेवाली हर मुश्किल का सामना करते हैं।

माथुर साहब को भी मेजर पुरी इसी तरह गिरफ्तार करते हैं। टगर अपने जाल में इन दरिन्दों को फसाती है। उनकी पूरी जानकारी हासिल करती है और पुरी साहब को बता देती है। ठाकुर आंतर्राष्ट्रीय तस्कर-व्यापारी था। तो माथुर सड़के मामले में पैसे ऐठ लेता था। उन दोनों को अपने कर्मों की सजा मेजर पुरी दिलवाते

हैं, वे माथुर साहब से कहते हैं - "मुझे अफसोस है माथुर साहब, कमिश्नर साहब के हुक्म से मैं आपको गिरफ्तार करने आया हूँ। और आपको भी, गहलोज साहब। गुप्ता साहब ने आपको सब कुछ बता ही दिया होगा। वैसे ये रहे आपके वारण्ट।"[28]

टगर मेजर पुरी को देशद्रोहियों की जानकारी देती रहती है, इसीलिए मेजर पुरी टगर के प्रति कृतज्ञ हैं। वे टगर जैसी नारी से सम्मान के साथ पेश आते हैं, उसका आदर करते हैं और बधाई देते हुए कहते हैं - हमारे देश में ऐसी नारियों का होना हमे इस विश्वास से भरता है कि हम बड़ी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

मेजर पुरी अपने कर्तव्य के प्रति नेक हैं। सैनिक होने के नाते अपनी जान की बाजी भी लगाने से नहीं चुकते हैं। वे कहते हैं - "हम सैनिक लोग उचित-अनुचित की उतनी चिन्ता नहीं करते जितनी कानून की।"[29] मेजर पुरी में सब अच्छे गुण पाये जाते हैं। अपना कर्तव्य करते हुए उनमें उत्साह प्रतीत होता है, देशद्रोहियों को सजा दिलाना यही उनका ध्येय है।

4· जासूसी के प्रति

"टगर" नाटक की नायिका टगर एक उत्साही स्त्री है। वह नाटक में हर वक्त जहाँ जहाँ हसती, मुस्कराती और गाती हुई दिखायी देती है। परित्यक्ता नारी होकर भी अपने दुख को भूलकर देश के कल्याण का ध्येय अपने सामने रखकर देशद्रोहियों के बारे में जानकारी मेजर पुरी को देती रहती है। "टगर" तस्कर व्यापारियों, देशद्रोहियों से प्यार का नाटक करती है। अपने सौंदर्य, यौवन को दाँव पर लगाकर देशद्रोहियों को ढूँढ निकालती है। उन्हें अपने प्यार के झूठे जाल में फँसाती है। विमला हर बार उसकी खिल्ली उड़ाती, उसकी घृणा करती रहती है पर टगर का मार्ग एक नेक मार्ग है इस मार्ग से गुजरते हुए वह किसी की परवाह नहीं करती। मेजर पुरी टगर के बारे में आदर के साथ ही बोलते है - "आप शायद जानती नहीं, यह सब इन्हीं के कारण सम्भव हो सका है" टगर इन देशद्रोहियों के बारे में जानकारी हासिल कर नहीं सकती तो मेजर पुरी कभी उनको पकड़ने में कामयाब

न होते।

टगर एक आदर्श नारी का प्रतीक भी दिखायी देती है जो अपने देश के लिए कुछ भी करने को तैयार है। पुरी उसके बारे में कहते हैं - हमारे देश में ऐसी नारियों का होना हमें इस विश्वास से भरता है कि हम बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

सरदार वारियामसिंह भी जानते हैं कि टगर एक अच्छी नारी है और वह देश के लिए इतने बड़े साहस का काम कर रही है। माथुर और ठाकुर जैसे देश के गद्दारों को टगर के कारण ही पकड़ा जाना मुमकीन हो सका है। वे भी टगर की जासूरी को जनते हैं उनकी दृष्टि से - "हमारे धन्य भाग जो तुम जैसी बहादुर बेटी यहाँ आयी····।"

टगर हर कार्य करते हुए अपने आप में एक उत्साह पाती है। सरदार वारियाम सिंह मिलने आते हैं तब भी वह आदर के साथ आगे पढ़कर पैर छूती है जिससे उत्साह प्रतीत होता है। परित्यक्ता नारी होकर भी अपना जीवन देश के प्रति समर्पित करके आदर और सम्मान पाती है।

4· **उत्सव के प्रति**

"बन्दिनी" नाटक में कालिनाथ राय को भी अपनी महानता दिखाने के लिए प्रीतिभोज का उत्सव करना है। जिसमें देवी माँ की प्राण-प्रतिष्ठा भी होनेवाली है। इस उत्सव का उत्साह कालीनाथ राय में जरूरत से ज्यादा ही दिखायी देता है। वे हर एक व्यक्ति को अपने सामने बुलाकर उनको अपने-अपने कामों के बारे में सूचना देते दिखायी देते हैं। प्रीतिभोज में क्या क्या मिठाइयाँ बनेगी ? पुरोहितजी ने अच्छा मुहूर्त निकाला है की नहीं ? बाहर के भाण्डार की चाबी किसके पास रहेगी ? ब्राहमणों के लिए क्या दान में दिया जाएगा ? हलवाई आये की नहीं इन सब बातों को सोचते, बताने और सूचना देते हुए कालीनाथ राय दिखायी देते हैं। यह सब बन्दोबस्त करते हुए कालीनाथ राय में उत्सव के प्रति उत्साह दिखायी देता है।

हँसी

हँसी वास्तव में एक मनोभाव या मनोविकार है। "प्रायः वार्तालाप में किसी के मुँह से कोई ऐसी बात निकल पडती है जिसे सुनते ही सब लोग अनायास हँस पड़ते हैं। अपने मौलिक रूप से यही हँसी है।"[30] आनंद, प्रसन्नता, सुख आदि को व्यक्त करने के लिए तथा मनोविनोद के लिए या उपहास या लोकनिन्दा तथा प्रेममूलग हँसी के लिए भी हँसी शब्द का प्रयोग किया जाता है और हँसी के साथ कभी-कभी दिल्लगी शब्द का प्रयोग भी इसी अर्थ में किया जाता है।

‹1› मनोविनोद पूर्ण हँसी

"डॉक्टर" नाटक में नाटककार विष्णु प्रभाकर ने गोपाल और अनीला के वार्तालाप में मनोविनोद के लिए हँसी प्रकट की है। छोटे बड़े को दिखाने के लिए नाटककार ने गोपाल और अनीला के वार्तालाप द्वारा हँसी मनोविकार चित्रित किया है -

गोपात : पिताजी से सुना था। कहते थे कि आप बहुत बड़ी डॉक्टर है।

अनीला : (हँसकर) तुम्हारा क्या खयाल है ? कुछ बड़ी दिखायी देती हूँ ?

गोपाल : हां, हां, मुझसे बहुत बड़ी है ? (पास आकर - खडा हो जाता है) देखो, मैं कितना छोटा हूँ····।"[31]

‹2› उपहासात्मक हँसी

प्रस्तुत नाटक में रामू के सुशिक्षित लडकी के साथ शादी करने के दिवा स्वप्न पर भी मनोविनोद परक हँसी का प्रयोग किया गया है। विशेषतः रामू और लीला के बीच हुए वार्तालाप में रामू के खयालों पर लीला हँसती है। रामू अनपढ़ और गँवार होने के बाद भी एक बी·ए·पास लडकी से शादी करने का दिवा स्वप्न रचता है। पढ़ाई के खर्च की बचत करना चाहता है। तब लीला उसे बेवकूफ कहकर जोर से हँसती है। रामू यह भी सोचता है कि लीला जैसी डॉक्टर के साथ शादी करके रामू भी डॉक्टरी सिखेगा और इस तरह दवा दारू का खर्च बच जायेगा। इस बात पर भी लीला हँसती है।

वस्तूतः लीला की यह हँसी जितनी मनोविनोद परक है उतनी ही परिहासपूर्ण भी। डॉक्टर नाटक में नाटककार ने यह दर्शाया है कि डॉ॰अनीला नयी मरीजा को देखने के लिए भी नहीं जाना चाहती पर उस मरीजा के बेटे के कहने पर वात्सल्य भाव के कारण कुछ परेशान होकर भी अपनी दुर्बलता छुपाएँ हंस पडती है। उनकी यह हँसी परिहासात्मक है। डॉ॰अनीला की दुर्बलता की ओर यहाँ संकेत है इतना ही नहीं दादा स्वयं अपनी दुर्बलता पर भी व्यंग्य करते हैं, अट्टाहास करते हैं वे अपने पास हमेशा पिस्तौल रखते है और इस पिस्तौल की कहानी स्वयं ही बताते हैं वे कहते हैं - इन्सान दुर्बल है, इसी दुर्बलता में से दया, करूणा, परोपकार, बड़े बड़े पुण्य-कर्मों का जन्म हुआ है। इसीमें से यह पिस्तौल निकली है। मैं दुर्बल न होता तो भला पिस्तौल क्यों लिए रहता। दया, करूणा, परोपकार और पिस्तौल···ज्योमेट्री की पुस्तक में देखना होगा कि उनकी रेखाएँ किन एंगल पर मिलती हैं····।

"डॉक्टर" नाटक की सनकी मरीजा नीरू भी इस नाटक में अनेक बार हँसती, हँसाती दिखायी देती है। जब नीरू डॉ॰अनीला से पूछती है कि क्या "मैं" पागल हूँ ? तब रामू ही उत्तर देता है कि वह पागल है, इस पर नीरू व्यंग्यात्मक हँसी प्रकट करती हुई कहती है जो पागल होता है उसे सभी पागल नजर आते हैं। जब रामू डॉ॰अनीला के बारे में सन्देह प्रकट करता है कि वह विधवा है या सधवा ? तब नीरू बहाका मारकर उत्तर देती है - "तू जरूर पागल है। आजकल विधवा और सधवा में कोई अन्तर नहीं होता। दोनों स्त्रियाँ होती है।"[32] नीरू की यह व्यंग्यात्मक हँसी नारी मनोविज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती है। एक स्त्री दूसरी स्त्री की भाव सरलता और आंतरिक भावोद्रेक सहज ही जान जाती है।

"टगर" नाटक के आरम्भ से टगर और ठाकुर का प्रेमालाप चल रहा है। इतने में वहाँ माथुर आ जाते हैं पर टगर और ठाकुर पर इस बात का कोई असर नहीं पड़ता। हँसते हुए टगर उनका स्वागत करती है और ठाकुर भी हँसते हुए कहते हैं कि इस कस्बो में झूठे शिष्टाचार रखने की कोई जरूरत ही नहीं है।

यह एक प्रकार की बेशर्मी की हँसी है। इस बात पर माथुर, टगर और ठाकुर तीनों जोर से हँसते हैं।

माथुर जब कहते हैं कि साहित्यिक क्रिमिनल नहीं होता तब भी इस बात पर टगर को हँसी आती है। उसकी राय से साहित्यिक क्रिमिनल ही होता है। टगर ठाकुर के सिर पर तेल का मालिश करती है और यह सब बाते माथुर के सामने हो रही है। इस वक्त टगर कहती है मेरे पास तो श्रृंगार का कोई सामान नहीं है सिर्फ बुढे बालक को मनाने के लिए जावाकुसुम की शीशी है। तब भी सब लोग याने टगर, ठाकुर और माथुर हँस पडते हैं।

ठाकुर कहते हैं कि टगर के साथ रहकर सब लोग प्रेम के मामले में समझदार हो गये हैं तो इस बात पर टगर खिलखिलाकर हँसती है। ठाकुर की दृष्टि से ठाकुर को बकबक करने की आदत है और टगर ही उनकी वास्तविक श्रोता है यह बात भी ठाकुर हँसकर ही कहते हैं। ठाकुर एक वृध्द गृहस्थ है फिर भी उनमें बार-बार हँसी विकार देखा जाता है। हँसी वास्तव में स्थायी भाव है। "टगर" नाटक में यह स्थायी भाव दिखायी देता है। माथुर भी कहता है कि नारी हारना जानती ही नही। तब भी टगर जोरों से हँसती है। टगर की दृष्टि से पुरूष हारना जानता है पर वह किसी गहरी जीत की आशा से हारता है। टगर का यही मतलब यही है की, उसके पास जो लोग हैं वह सब मतलब के कारण ही उससे हारना चाहते हैं। उनके स्वार्थ को टगर अच्छी तरह जानती है।

टगर ठाकुर की लालच को जानती है। माथुर जब प्यार का नाटक करता है तो टगर अपनी हँसी रोक नहीं पाती है। बार-बार इस नाटक में ऐसे प्रसंग दिखायी देते हैं। माथुर और ठाकुर का प्रेम सिर्फ ढोंग है। ठाकुर प्रकृति प्रेम का वर्णन करता है तब भी टगर को हँसी आती, यह व्यंगयात्मक हँसी है। ठाकुर टगर से कहता है - 'तुम ने तो मुझे पागल कर दिया है।' इस पर भी दोनों जोरों से हँस पडते हैं। यहाँ पर विसंगत प्रेम पर ही हँसी दिखायी देती है।

टगर अपने प्यार के जाल में माथुर को भी फँसा देती है। अपने मोहिनी सुरत का जादू उस पर भी डाल देती है और जब माथुर कहता है कि - तो मुझे इतनी देर से क्यों परेशान कर रही थी ? तब माथुर अपने जाल में फँस गया यह देखकर भी टगर जोरों से हँसती दिखायी देती है। यहाँ पर भी जैसे शिकारी को शिकार मिलने के बाद जो हँसी आती है वही दिखायी देती है।

माथुर टगर के साथ शादी करके भाग जाना चाहता है इस बात पर भी टगर को हँसी आती है। शादी करना और भागना इस कल्पना से ही उसे हँसी आती है। इस नाटक में सामूहिक हँसी के प्रसंग भी बार-बार दिखायी देते हैं। टगर की मुस्कराहट तो बार-बार दिखायी देती है।

· <u>(3) प्रेम मूलक हँसी</u>

"बन्दिनी" नाटक में नाटककार विष्णु प्रभाकर ने उमा और सुरेन्द्र के प्रति पत्नी-प्रेम और उनकी शरारते परिलक्षित करते हुए उमा की शरारती हँसी को प्रकट किया है। उमा और सुरेन्द्र अपने शयन कक्ष से बाहर आते हैं और तब उन दोनों में जो उन्मुक्त भावना प्रकट होती है तब सुरेन्द्र अपनी पत्नी से सहज भाव से कहता है कि उसने शयन कक्ष में जब उमा को चूमा तब उसमें प्यार ही ज्यादा है वह कोई पाप नहीं है। इस प्रसंग पर उमा लज्जित होकर शरारती हँसी व्यक्त करती है। इतना ही नहीं जब दोनों शयन कक्ष में शरारती बाते करते हैं तब भी उमा शरारती हँसी व्यक्त करती है। जब सुरेन्द्र उमा से कहता है कि तुम जाग रही हो ? तब वह सुरेन्द्र से कहती है मैं सो रही हूँ। इतना ही नहीं जब सुरेन्द्र कहता है कि यह जवाब किसने दिया तब वो सुरेन्द्र के प्रति झेंप जाती है और कहती है कि "मैं पहले सो रही थी और अब जाग गई हूँ। तब सुरेन्द्र उमा को गुदगुदाता है तब वह जोर से शरारती हँसी प्रकट करती है।[33]

<u>लज्जा या ग्लानि</u>

"दूसरों के चित्त में अपने विषय में बुरी या तुच्छ धारणा होने के निश्चय या आशंका मात्र से वृत्तियों का जो संकोच होता है - उनकी स्वच्छंदता के विघात का जो

अनुभव होता है - उसे लज्जा कहते हैं।"[34] इस मनोवेग के कारण लोग, सिर ऊँचा नहीं करते। मुँह नहीं दिखाते, सामने नहीं आते, साफ-साफ बातें नहीं करते। लोग घृणा न करे, उपहास न करे, निंदा न करे इस कारण लज्जा का सहारा लिया जाता है। पश्चाताप के कारण ग्लानि पैदा होती है। यदि हमने ऐसा नहीं किया होता तो आज हमारी यह गति क्यों होती ? यही पश्चाताप की भावना है। अपमान के कारण भी लज्जा या ग्लानि उत्पन्न होती है।

"डाक्टर" नाटक की नायिका डॉ॰अनीला एक परित्यक्ता नारी है। सतीशचन्द्र ने पढ़ी-लिखी न होने के कारण उसका त्याग किया है। इस अपमान कि चिंगारी अनीला के मन में हमेशा जलती रहती है। वह प्रतिशोध में तड़पती रहती है। उसके मन में 15 सालों से तूफान उठता है। इस बात को सिर्फ केशव जानता है। जो अनीला का सहयोगी डॉक्टर है। अनीला की इस हालत में वह अनीला को सहारा देना चाहता है। उसके दुख को कम करना चाहता है। पाच सालों से वह अनीला की इस हालत को देखता आ रहा है। पर अनीला उसके प्यार को स्वीकार नहीं सकती। लोग लाज की भय के कारण वह केशव के प्यार को ठुकरा देती है। लोग बुरा न कहे इसलिए अपने आपको धोखा देती रहती है।

अनीला : (मौन रहती है, फिर फुसफुसाती है) वह बात, अब इस आयु में ? नहीं, नहीं केशव । क्या कहेंगे सब ?

केशव : यही तो कायरता है। सबकी चिन्ता मत करो। अपने को देखो। सबको प्रसन्न करने के लिए अपने आपको धोखा देना दम्भ है और दम्भ से बड़ा कोई पाप होता है, यह मैं नही जानता।[35]

सिर्फ लज्जा के कारण वह अपनी बात स्पष्ट नहीं करती पर वह भी जानती है कि अपना जो दुख वह अपने भाई दादा से भी नहीं कह सकती वही बात वह केशव से आसानी से कह सकती है। केशव को अनीला भी अपने करीब पाती है। पर लोगों की बुराई के डर के कारण वह प्यार की मत का इजहार नहीं कर पाती।

"टगर" नाटक के ठाकुर पात्र में लज्जा व ग्लानि दिखायी देती है। ठाकुर एक बुढ़ा बैल है, उसकी आयु 50 साल की है फिर भी वह टगर जैसी 25 वर्षीय युवती से प्यार करता है। इस बात की शर्म वह महसूस करता है। लोगों के सामने वह भले ही प्रेम का प्रदर्शन करता हो पर उसके मन में कही पर यह खटकता रहता है कि उसने इस आयु में एक युवती से प्रेम किया है। टगर और माथुर बाकायता एकसाथ रहते हैं। इस बात की चर्चा लोग करते होंगे यह भी ठाकुर को मालूम है। उन दोनों को माथुर एक साथ देखता है तो माथुर को भी लज्जा और ग्लानि महसूस होती है। ठाकुर भी कहता है कि, "...हमको कितना नाटक करना पडता है यह बताने के लिए कि बहुत जल्दी सचमुच ही हमारा विवाह होनेवाला है।"[36] दुनिया यह समझती है कि ठाकुर ने टगर को भगाके लाया है और ठाकुर बुढ़े हैं और टगर युवती है इस बात की ग्लानि भी ठाकुर महसूस करते हैं।

टगर - "टगर" नाटक नायिका टगर में भी नाटक के अंत में ग्लानि दिखायी देती है। टगर एक सीधी-साधी भोली औरत थी पर उसके पति शेखर ने उसका त्याग करने के बाद उसके मन में पुरूषों के प्रति नफरत पैदा होती है और वह एक के बाद एक पुरूषों को अपने जाल में फँसाती है। माथुर, टगर और नाजिम जैसे पुरूषों के पास रहती है। प्रतिशोध हुई उसकी यह अवस्था बाद में उसेही खलने लगती है। उसीके शब्दों मे - "कहां वह भोली-भाली बुध्द-सी रश्मिप्रभा, कहाँ यह टगर - जितनी निर्भीड, उतनी ही निर्दय।"[37] टगर नाजिम से शादी तय कर लेती है पर इसी बीच शेखर आता तब भी टगर को लगता है कि मुझे बदनाम करने के लिए ही शेखर को बुलाया गया है। इस बदनामी के कारण भी वह हर एक से पूछती रहती है कि शेखर को किसने बुलाया है। लज्जा होने के कारण ही वह प्रतिशोध का यह खेल और खेलना नहीं चाहती।

"बन्दिनी" नाटक में प्रातःकालीन वातावरण में सुरेन्द्र और उमा शयन कक्ष से आते दिखायी देते हैं। तब सुरेन्द्र उमा से बता रहा है कि मैं तुमसे मिलने के लिए जात्रा बीच में ही छोडकर आया हूँ, तुम तो वैसे ही ठंड में सोयी रही

थी1 मैंने तुम्हारे ऊपर रजाई ओढ दी और तुम्हे चुमा तब इस बात पर उमा शर्म महसूस करती है वह लज्जा से सुरेन्द्र से कहती है "हटो-हटो, शर्म नहीं आती इस प्रकार की बाते करते। एक तो रातभर जात्रा देखते रहे और फिर आकर।"[38]

उसके बाद बन्दिनी नाटक में उमा में ही आत्मग्लानि भी दिखायी देती है1 उमा के अंधविश्वास के कारण ही सावित्री का बेटा अनु मर जाता है। उमा भी उसे अपनी जान से जादा प्यार करती थी। अपने ही कारण अनु मर गया है यह बात सोचकर ही उमा में ग्लानि उत्पन्न हो जाती है। "मेरी अपनी ही करतूत ने मुझसे वह सब छिन लिया जो मुझे प्रिय था। अब मुझसे जिया नहीं जा सकेगा। अरे प्रभु! अब कोई कारण मेरी रक्षा नहीं कर सकेगा।[39] यहाँ उमा में आत्मग्लानि उत्पन्न होने के कारण ही प्रायश्चित्त की भावना से उमा आत्महत्या कर लेती है।

स्वप्न

स्वप्न वास्तव में मानव के मन में उद्‌भूत होने वाला एक संचारी भाव है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में संचारि भाव के रूप में स्वप्न का प्रयोग हुआ है। अमरकोश में स्वप्न शब्द निद्रा या शयन के अर्थ में व्याप्त हुआ है। फ्रायड़ स्वप्न को एक महत्त्वपूर्ण मानसिक क्रिया मानता है। उनके अनुसार स्वप्नों में इच्छापूर्ति अधिकांश निरावरण होती है और स्वप्न दमित भावों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिशु स्वप्न प्रायः छोटे और सरल होते हैं और वयस्कों के स्वप्न किसी न किसी समस्या का संकेत किया करते हैं। फ्रायड़ ने यौनेच्छा को मानव जीवन की परिचालिका माना है और मनुष्य के मन में इस सिलसिले में कुछ स्वप्न लहराते हैं। संक्षेप में स्वप्न अचेतन की दमित यौनेच्छाओं का चेतन स्पष्टीकरण है। स्वप्न के कालभेद की दृष्टि से मुख्यतः नैश्य-स्वप्न और दिवा स्वप्न माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त इच्छापूर्ति स्वप्न, चिन्ता स्वरूप स्वप्न, भविष्य सूचक स्वप्न, गति स्वप्न, दण्ड स्वप्न, पुनरार्वक स्वप्न, आदि स्वप्न के अन्य प्रकार भी हैं।

(1) **दिवा स्वप्न**

"डॉक्टर" नाटक में रामू नामक एक पात्र है जो नर्सिंग होम का सेवक है वह पढ़ा-लिखा नहीं है। लेकिन उसके मन में पढ़ी-लिखी युवती से शादी करने की इच्छा होती है और वह एक तरह का दिवा-स्वप्न रचता है तो सोचता है कि "हम पढी-लिखी बी.ए.पास बीबी से शादी करेंगा। वह हमारी बीबी होंगा, हमारा घर रखेंगा और हमें पढापेंगा और इस तरह...."[40] पढ़ायी का खर्च भी बच जाएगा। वह यह भी, कल्पना करता है कि अगर इस तरह सब लोग करेंगे तो भी पैसे की बचत होगी और मुल्क भी अमीर बन जाएगा। वह यह भी कल्पना करता है की अगर कोई औरत डॉक्टर होती है और वह अनपढ़ पति को डॉक्टरी की शिक्षा देती है तो दवा-दारू का खर्च भी बच जाता है और इसीलिए रामू कहता है कि हर बीबी को डॉक्टर होना चाहिए। वह अपने मन में यह भी इच्छा व्यक्त करता है कि अगर वो डॉक्टर बीबी के साथ शादी करेगा और डॉक्टर बन जाएगा तो वह स्वयं और बीबी मिलकर डॉक्टर अनीला की खूब मदद करेगा।" रामू का यह दिवा स्वप्न वस्तूतः उसकी इच्छापूर्ति का प्रयास है।

"बन्दिनी" नाटक में जमींदार कालीनाथ राय का बेटा सुरेन्द्र अपनी पत्नी उमा के प्रति प्यार करते हुए अपने भविष्य के प्रति एक दिवा स्वप्न की कल्पना करता है वह उमा से कहता है कि देवी की प्रतिमा की स्थापना होने के बाद वह नौकरी करने शहर जाएगा। तत्पश्चात उमा के मायके जाने के बाद, वहाँ से उमा को शहर लेकर जाएगा। और वहाँ किराए का घर लेकर हम दोनों दिन रात एक साथ रह सकंगे। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए -

उमा : तो नौकरी करने से क्या होगा ?

सुरेन्द्र : वहाँ मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा और फिर हम दोनों को कोई अलग नहीं कर सकेगा।

उमा : आप तो ले जाएंगे, लेकिन यहाँ के लोग मुझे जाने क्यों देंगे ?

सुरेन्द्र : अरी शैतान। यहाँ से थोडे ही ले जाऊंगा। तुम भी तो मायके जाओगी न। बस वही से तुम्हे चुपचाप आकर ले जाऊंगा।

उमा : खूब हँसती है ओ बाबा, क्या शेखचिल्ली के से महल बनाते हो। भला ऐसा भी कहीं हो सकता है?

सुरेन्द्र : क्यों नहीं हो सकता ? देख लेना, ऐसा होकर रहेगा।

उमा : अच्छा जी, मान लिया होकर रहेगा। पर कितने दिन हम वहां रहेगे?

सुरेन्द्र : जब तक जिएंगे, तब तक रहेंगे।[41]

कहने की आवश्यकता नहीं कि क्या रामू क्या सुरेन्द्र दोनों के स्वप्न कभी साकार नहीं होते हैं। दिवा स्वप्न की विशिष्टता ही यही है।

<2> कर्तव्यपूर्ति का स्वप्न

विष्णु प्रभाकर के "डॉक्टर" नाटक में मुख्यतः स्वप्न के बारे में दो प्रकार के विचार प्रकट हुए है। स्वप्न के दो प्रकारों को इस नाटक में अभिव्यक्त किया गया है। डॉक्टर अनीला की बेटी शशि अपने मामा के नाम एक पत्र भेजती है और उस पत्र में वह अपनी माँ के बारे में अर्थात डॉ॰अनीला के बारे में कहती है कि उसकी माँ स्वप्न में भी कुछ बड़बड़ाया करती है वो हर मरीज का नाम लेती रहती है उनको दवा बताती है और आदेश देती है वह यह भी सोचती रहती है कि मरीज उसकी याद करते होंगे। अर्थात शशि के पास जाकर भी डॉ॰अनीला के मन में अपना नर्सिंग होम और मरीज स्वप्न में दिखायी देते हैं। अनीला यह स्वप्न उसकी कर्तव्य परायणता का एक स्वाभाविक स्वप्न है जो विधायिनी स्वप्न है।

भय और चिन्ता

भय को उचित अवसर पर सदुपयोग में लाया जाय तो इससे व्यक्तित्व का विकास होता है। भय बचाव के कारण भी होता है और कायरता के कारण भी होता है। हिंस्त्रक जन्तु, निर्जन स्थान, स्मशान, वन, अत्याचारी शत्रु, भूत, प्रेत, आदि

के कारण भय उत्पन्न होता है। भय के कारण शंका, जुगुप्सा, चिंता, मुर्च्छा, आवेग, दैन्य, मोह, ग्लानि, दीनता आदि संचारी भाव दिखायी देते हैं। कभी कभी यह भी दिखाया देता है कि मानव जीवन में भयावह व्यक्ति चिन्ताग्रस्त भी बन जाता है। भय से चिन्ता मनोविकार उद्भूत होता है। "...जंगली और असभ्य जातियों में भय अधिक होता है। जिससे वे भयभीत हो सकते हैं, उसी को वे श्रेष्ठ मानते हैं और उसी की स्तुति करते हैं। उनके देवी-देवता भय के प्रभाव से ही कल्पित होते हैं।"[42]

"डॉक्टर" नाटक की नायिका अनीला की सौत सतीशचन्द्र शर्मा की पत्नी अस्पताल में दाखिल होती है। अनीला की अनुपस्थिति में दाखिल होने के कारण मरीजा के बारे में अनीला को कुछ भी मालूम नहीं है पर मरीजा का बेटा उसे मिलने आता है। गोपाल की आँखे देखकर अनीला के मन में भय पैदा होता है।

अनीला : कांपकर शशि और इसकी आँखे। वही तो, वही तो मुझे भी भ्रम हुआ, और आंखें ही क्यों ? (तेजी से कागज पलटती है) क्या नाम है इसके पिता का पढ़ती है सतीशचन्द्र शर्मा....

सईदा : जी हां, झांसी के रहनेवाले हैं। अभी तक असम मे थे, अब पूना में.... (अनीला दृढांत पीली पड़ जाती है) दीदी, दीदी, क्या बात है ....?"[43]

सईदा अनीला से कहती है कि नीरू कह रही थी कि यह मरीजा आपकी कोई परिचित है। तब भी अनीला में भय के कारण ही कंपन दिखायी देता है। अतीत का भय उसके सामने खड़ा होता है। तो वह कांपती है और फिर तलखी से कहती है कि और तुमने उसकी बातों का विश्वास कर लिया ?

सतीशचन्द्र शर्मा की पत्नी मरीजा जो फ्लूरिसी से बीमार है उसका ऑपरेशन करना जरूरी है पर अनीला डॉक्टर होकर भी ऑपरेशन करना नहीं चाहती।

दादा अनीला को डॉक्टर के कर्तव्य की याद दिलाते हैं। प्यार से घृणा का बदला लेने के लिए कहते हैं। प्रेम से जीतने के लिए कहते हैं पर अनीला नही मानती तो दादा उसे कायर कहकर तुम डॉक्टर क्यों बनी ? उसके पीछे बहादूरी नहीं है तो चुनौती है ऐसा कहना चाहते है पर अनीला इस बात पर भी कांप जाती है। दादा क्या कहेंगे इस बात का भय उसके मन में पैदा होता है -

दादा : (मुस्कराकर पास आते हुए) अनीला। डॉक्टर तुम केवल इसलिए नहीं बनी कि तुम बहादुर थी।

अनीला : तो और किसलिए ?

दादा : वह तुम जानती हो।

अनीला : (कांपकर) दादा। ।"[44]

मरीजा को लेकर अनीला के मन में जो भय है उसीके कारण अनीला के पेट में दर्द हो उठता है (कांपकर) कहती है - हां, हां काकी। पेट में बहोत तेज दर्द है। जरा पानी गरम करो न, सेकूंगी। चलो, मैं अभी आयी हूँ।"

भय के कारण ही अनीला ऑपरेशन का दिन तय होने के बाद भी शशि को देखने का बहाना करके घर से भाग जाती है इसके पिछे भी भय ही है। तभी तो केशव भी उसे कहता है - दोनो हाथ हिलाकर भागनेवाले कायर के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकते।

डॉ॰अनीला के भाई दादा हैं। सतीशचन्द्र शर्मा ने अनीला का त्याग किया है। अनीला गवार और अनपढ होने के कारण सतीशचन्द्र ने बिना वजह उसे घर से बाहर निकाल दिया है। इस बात का गुस्सा दादा के मन में पनप रहा है। दादा सतीशचन्द्र शर्मा का बदला लेना चाहते हैं। इस दिन के इन्तजार में उन्होंने बरसो बीताएँ हैं, पर जब सतीशचन्द्र शर्मा अनजाने में सामने आना चाहता है तो दादा घबरा जाते हैं। सतीशचन्द्र शर्मा अपनी दूसरी पत्नी मरीजा को लेकर अनीला को अस्पताल में दाखिल करने आते हैं पर दादा उसे सामने नहीं

आने देते , क्योंकि इसके पीछे भय है।

मरीजा को अस्पताल में दाखिल करने के बाद भी सतीशचन्द्र का और खुद का सामना न हो, इसलिए दादा का हप्ते के लिए गांव चले जाते हैं। अनीला अस्पताल में आ जाएगी तो उसे भी सतीशचन्द्र शर्मा और मरीजा के बारे में जानकर क्या लगेगा ? इस बात का भी भय दादा के मन में होता है तभी तो वे भाग जाते हैं। अनीला अस्पताल में वापस आ जाती है और दादा भी गांव से वापस आते हैं तो दादा अनीला से साफ कहते हैं कि क्यों उन्होने सतीशचन्द्र को सामने नहीं आने दिया ?

दादा : क्यों न पहचान लेता। लेकिन मैंने उसे अपने सामने आने का अवसर नहीं दिया।

अनीला : (व्यंग्य से) क्यों ?

दादा : क्योंकि मुझे डर था कि मैं उसे पिस्तौल का निशाना बना बैठता।[45]

इसके कारण ही दादा हमेशा अपने पास पिस्तौल रखते हैं। सब लोग जानते हैं कि दादा के पास हमेशा पिस्तौल रहती है। नीरू जो एक पागल सनकी मरीजा है वह भी दादा के अंदर छिपे भय को जानती है। नीरू कहती है कि दादा अपना पिस्तौल अपने पास रखें। यह आपकी बुजदिली की निशानी है।

डॉ॰अनीला के हाथों मरीजा का कुछ बुरा न हो जाये इस बात के कारण भी दादा के मन में भय है इसलिए तो नाटक के अंत में अनीला ऑपरेशन पूरा करती है। दादा को गर्व महसूस होता है वे अनीला को प्यार से थपथपाते हैं। अब उन्हें सतीशचन्द्र के सामने जाने में कोई डर नहीं लगता।

"डॉक्टर" नाटक में विष्णु प्रभाकर ने यह भी दर्शाया है कि अस्पताल के सहयोगी डॉक्टर सईदा, सेवक रामू, सेविका बूढी काकी, सनकी मरीजा नीरू इसलिए चिन्तीत होते हैं कि अपनी सौत के प्रति प्रतिशोध की भावना के कारण

डॉक्टर अनीला मरीजा को मार तो नहीं डालेगी। लेकिन इन सबकी चिन्ता व्यर्थ ही बनी रहती है। जब डॉ॰अनीला मरीजा का ऑपरेशन करने में कामयाब होती है तब इन सबकी चिन्ता हवा में उड़ जाती है।

"टगर" नाटक की नायिका टगर एक आधुनिक परित्यक्ता नारी है। शेखर जैसा विद्वान साहित्यकार ने उसे अनपढ़ होने के कारण छोड़ दिया है। टगर प्रतिशोध के कारण शेखर का ही नहीं तो उसके जीवन में आने वाले हर पुरूष का बदला लेना चाहती है। वह ठाकूर, माथुर जैसे लोगों को भी बरबाद कर देती है। पर नाजिम के बारे में ऐसा नहीं होता वह नाजिम पर प्यार करने लगती है। पर शेखर ने जो दुख उसे दिया है उसे वह भूल नहीं पाती। नाजिम के बारे में भी उसके मन में भय के कारण शंका पैदा होती है। आखिर नाजिम भी तो पुरूष ही है। अपने पूर्व चरित्र के बारे में उसके मन में भी पुरूषोचित भावनाएँ उभर सकती है इस बात का भय टगर को सलता रहता है। टगर नाजिम से कहती है - "अभी मैं तुम्हारी प्रेमिका हूँ लेकिन जब तुम कानून की दृष्टि से मेरे पति हो जाओगे तो तुम बदल जाओगे। तुम स्वामी, भर्ता, परमेश्वर न जाने क्या-क्या रूप धारण कर लोगे। तब क्या तुम्हें बार-बार मेरा भूत याद नहीं आयेगा। तुम कुरदे-कुरदे कर मेरे आत्मसमर्पण की बात नहीं पुछोगे ? नहीं पुछोगे कि क्या मेरा कोई और प्रेमी था॰॰॰॰?"[46]

टगर एक बार पुरूष पर भरोसा करके धोखा खा चुकी है तो किस पुरूष पर विश्वास नहीं कर सकती। इसी कारण वह अब पुरूष के हाथ का खिलौना नहीं बनना चाहती। पुरूष प्रेयसी से प्यार कर सकता है पत्नी से नहीं" इस बात का भय उसके मन में है।

सुरेन्द्र कालीनाथ राय का छोटा बेटा है। कालीनाथ राय अपने बड़े बेटे उपेन्द्र पर विश्वास करते हैं। उसके कर्तृत्व पर कालीनाथ राय को गर्व है। पर सुरेन्द्र की बुध्दी पर कालीनाथ राय शंकित है। सुरेन्द्र जमींदारी नहीं निभा सकता इस बात पर कालीनाथ राय सुरेन्द्र पर हमेशा बिगड़ते रहते हैं। कालीनाथ राय की घर पर ही नहीं तो आस-पास के गावों पर भी धाक है। सुरेन्द्र भी अपने

पिता से घबराता है। इसलिए तो वह उमा को भगाकर ले जाना चाहता है।

कहती है : आप तो ले जाएंगे, लेकिन यहां के लोग मुझे जाने क्यों देंगे ? तब

कहता है : यहाँ से थोड़े ही ले जाऊंगा। तुम कभी तो मायके जाओगी न। बस वहीं से तुम्हे चुपचाप आकर ले जाऊंगा।"

कालीनाथ राय के सपने में देवी माता आती है और उमा देवी के रूप में तुम्हारे घर में अवतरित हुई है ऐसा कहती है तो कालीनाथ राय उमा को देवी माँ मानकर उसके चरण छूने लगते हैं यह देखकर भी सुरेन्द्र भयभीत होता है वह भय के कारण चीखकर कहता है - "नहीं, यह सब झूठ है, झूठ है।" वह घबराकर उमा को अन्दर के कमरे में हो जाने की चेष्टा करता है।

उमा को कालीनाथ राय पूजा घर में बन्दी बनाता है। उसे किसीसे मिलने नहीं दिया जाता तब सुरेन्द्र रात के समय उससे मिलने आता है। कालीनाथ राय के डर के कारण अपनी पत्नी को मिलने चोरी-छिपे आता है। उमा से मिलकर वह जाने लगता है तब उसे सुबह तक रूकने के लिए कहती है पर पिताजी जाग जायेंगे इस भय के कारण वह नहीं रूकता। अगले शनिवार तक के लिए विदा कहकर चला जाता है। कालीनाथ राय कि जिद को वह अच्छी तरह पहचानता है तभी तो वह उनसे विरोध नहीं कर सकता। परिस्थिति से बार-बार भयभीत होता रहता है।

उमा कालीनाथ राय की छोटी बहु है। वह अभी बच्ची की तरह ही है1 बडी जेठानी का बेटा अनु के साथ हर वक्त उमा खेलती कूदती नजर आती है। छोटी-छोटी बातों पर वह घबरा जाती है। अनु हमेशा उसके साथ रहता है। जब वह उमा के पास नहीं होता तो भी उमा घबरा जाती है। सुरेन्द्र घर छोडकर शहर जाना चाहता है तब भी उमा का मन आशंका से भर जाता है। गहरी सास लेकर कहती है - "मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं इस प्रकार फिर सभी आपसे नहीं मिल सकूंगी।

कालीनाथ राय सपने के अनुसार उमा को देवी माँ मानकर पूजा गृह में बन्द कर देते हैं। उमा को किसीसे मिलने नहीं देते, तब भी उमा की दशा पागलों जैसी होती है। चाँदनी रात का सुंदर दृश्य उसे भयावह लगता है। सुरेन्द्र चोरी-छिपे उमा को मिलने आती है और सात दिन तक यही नाटक करते रहना कहकर जाने लगता है। सात दिन में मैं तुम्हें यहां से ले जाऊंगा यही आश्वासन देता है। तब उमा को लगता है सात दिन में मैं मर जाऊंगी, जी नहीं सकती। सुरेन्द्र चला जाने के बाद वह टूटकर गिर जाती है और कहती है कि उसके पति उसे छोडकर चले गए और इसी कारण उसे कोई अज्ञात भय रह रहकर मथता जा रहा है। इस बंदिगृह में कहीं मैं इसी तरह इन्तजार करते करते मर न जाऊं ? इस भय से उमा भयभीत है।

नाटक के अन्त में भी अनु उसी के कारण उसीकी गोद में मर जाता है तब भी वह भय के कारण पश्चाताप को व्यक्त करती है। अनु जो उसे प्यारा है वह मर न जाये इस कारण देवताओं, मृत्यु लोक के देवताओं को पुकारती है। बिनती करती है, पश्चाताप करती है। पर अनु मर जाता है। आखिर में भयभीत उमा आत्महत्या कर लेती है।

सावित्री कालीनाथ राय की बडी बहू है। वह अपने बेटे अनु को बेहद चाहती है। पर अनु उमा के साथ ही रहता है। उसीके साथ चाची-चाची करके हँसता खेलता है यह देखकर सावित्री को अच्छा लगता है। पर उमा जब अपने आपको देवी समझने लगती है तब अनु को पास भी नहीं आने देती। अनु उसके लिए बीमार पड़ जाता है। पर उमा उसे वैद्यजी की दवा देने से इन्कार कर देती है। अपने चरणामृत से अनु को अच्छा करने का वादा करती है। तब सावित्री को इस बात का विश्वास नहीं होता। अनु उमा के चरणामृत से अच्छा होगा या नहीं इस भय से वह पुराहित से पूछती है कि पुरोहितजी, क्या सचमुच मेरा अनु बिना दवा के ठीक हो जाएगा ?

अनु की गिरती हुई हालत को वह देख नहीं सकती। भय के कारण उसकी अवस्था पागलों जैसी होती है। कालीनाथ राय उसे चुप करना चाहते हैं

पर वह चुप नहीं रह सकती। कुछ ही देर में वह भागी हुई आती है। उसके बाल खुले हैं। आँखों में भय और घृणा उभरी पड़ती है। और वह अनु को देखकर कहती है कि मेरा मुन्ना जा रहा है। मेरा अनु तड़प रहा है। मैं अब किसीकी नहीं सुनूंगी। अगर यह देवी होती तो मेरा अनु कभी का ठीक हो गया होता। सावित्री आखिर अनु की माँ है। वह अनु को इस तरह तड़पते नहीं देख सकती। अनु की अवस्था को वह जान जाती है। तभी तो वह बार-बार सबके मना करने पर भी अनु के पास खींची चली आती है। मेरा अनु, मेरा अनु कहके पुकारती है। अनु के होश में आने के इन्तजार में तड़पती रहती है।

विश्वेश्वरी "बन्दिनी" नाटक में एक अधेड उम्र की स्त्री है, जो अपनी बेटी के कारण परेशान है। उसकी बेटी प्रसव वेदना से तीन दिन से छटपटा रही है। अपनी बेटी मर न जाए इस भय के कारण वह घबरा जाती है। उमा की देवी माँ बन जाने की चर्चा सुनकर वह बड़ी आशा के साथ भय के कारण अन्धश्रध्दा कासहारा लेती है। वह उमा के पास जाती है। विश्वेश्वरी कहती है - "माँ मेरी बेटी आज तीन दिन से छटपटा रही है। उसके प्राण संकट में है। उसकी रक्षा करो माँ। वह रोती बिलखती, कांपती हुई उमा को साष्टांग प्रणाम करती है।

पूंटी राखाल की पुत्र-वधू है। वह विधवा है। राखाल का बेटा मर चुका है पर पूंटी को एक बेटा है जो राखाल का नाती है। उस बच्चे को तेज ज्वर है। ज्वर के कारण वह बेहोश हो गया है। पूंटी को लगता है कि उसका बेटा जो अब उसके घर का, कुल का दिपक है वह मर जाएगा। इस भय के कारण वह भी अन्धविश्वास का सहारा लेती है। वह अपने बच्चे को लेकर उमा के चरणों पर रख देती है - पूंटी उमा से कहती है - "इसे प्राणदान देकर हमें बचा लो माँ। करूणामयी माँ हो तुम। कहकर पुंटी आशाभरी नज़रों से उमा की तरफ देखती है। पूंटी एक तो वैधव्य के कारण भयभीत है। उससे एक ही बच्चा है वह भी अब मरणासन्न अवस्था में है। यह देखकर पूंटी भयभीत होती है। उसके जीने का एक वही तो सहारा है जो अब कुछ ही पल का मेहमान है, इस आशंका से पूंटी भयग्रस्त है।

भ्रान्ति

भ्रान्ति मानव मन में निहीत एक विशिष्ट मनोभाव है। इस अवस्था में व्यक्ति किसी चीज के प्रति शंका या संदेह व्यक्त करता है। वास्तव में भ्रान्ति एक ऐसी मानसिक स्थिति है जिसमें किसी चीज के ठिक तरह से पहचान या समझ न सकने के कारण कुछ और ही मान लिया जाता है। भ्रान्ति या शंका एक तरह का संचारी भाव है।

"डॉक्टर" नाटक में डॉ॰अनीला की बेटी शशि और मरीजा का बेटा गोपाल की आँखों को देखकर सईदा ओर अनीला दोनों में मन में भ्रम पैदा होता है। वस्तुतः शशि और गोपाल के पिता, दोनों के एक ही हैं। अर्थात सतीशचन्द्र शर्मा डॉ॰अनीला के पति हैं और शशि के जन्म के उपरान्त अपनी पत्नी अनीला को अनपढ और गँवार होने के कारण त्याग दिया था। तत्पश्चात उन्होंने मरीजा से शादी की थी। गोपाल उनका ही बेटा है। वस्तुतः अनुवंशिकता के आधार पर शशि और गोपाल की आँखों में सादृश्य देखकर सईदा और अनीला के मन में भ्रम पैदा होता है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए -

सईदा : सच दीदी। मुझे भी ऐसा ही लगा था। शशि और इसकी आँखे····

अनीला : कांपकर शशि और इसकी आँखे। वही तो, वही तो मुझे भी भ्रम हुआ और आँखे ही क्यों ? तेजी से कागज पलटती है सतीशचन्द्र शर्मा·····"[47]

इस वार्तालाप के अलावा गोपाल को देखकर डॉ॰अनीला की सेविका 60 वर्ष की बूढी काकी को भी भ्रम निर्माण होता है काकी कहती है - इस छोरे की सक्ल-सूरत हूबहू अपनी सासि से मिले है। वैसी ही आंखे, वैसा ही नाक-नकस, वो ही आवाज, वो ही सुभाव। यहाँ काकी में भ्रान्ति दिखाई देती है। नाटककार विष्णु प्रभाकर ने प्रस्तुत नाटक में डॉ॰अनीला के सम्बन्ध में रामू और नीरू के वार्तालाप से भी भ्रम की स्रृष्टि की है। रामू के मन में यह सन्देह निर्माण होता है कि डॉ॰अनीला विधवा है या सधवा ? तत्पश्चात रामू यह भी संदेह करता है कि

उसके समझ में नहीं आता की डॉ॰अनीला का अस्पताल नर्सिंग होम है या चिडीयाबार, या पागलखाना है या थोडा-थोडा सब कुछ। डॉक्टर नाटक के प्रथम अंक की यहाँ समाप्ति होती है।

जब मरीजा के ऑपरेशन की पूरी तैयारी हो जाती है, तब वहाँ सतीशचन्द्र शर्मा उपस्थित होते हैं वह ऑपरेशन थिएटर में नहीं जा सकते हैं, लेकिन उनके मन में यह सन्देह पैदा होता है कि क्या डॉक्टर अनीला उसकी पत्नी को बचा लेगी ? और हम देखते हैं कि नाटक के अंत में अनीला मरीजा का ऑपरेशन पूरा करके उसे बचाती है और सतीशचन्द्र शर्मा का संदेह दूर हो जाता है।

विष्णु प्रभाकर के "टगर" इस नाटक में कुछ पात्रों में भ्रान्ति या संदेह विकार पाया जाता है। इस नाटक का स्त्री पात्र टगर पति के त्यागने के बाद ठाकुर के पास रहने लगती है। उसको अपने प्यार के जाल में फसाने के बाद वह ठाकुर का मित्र माथुर के पास चली जाती है। माथुर उसे कहता है कि मैं तुमसे बेहद प्यारकरता हूँ, क्योंकि तुम सुंदर हो इसीलिए। पर टगर उसके प्यार पर शंकित होती है। माथुर का प्यार एक ढोंग या छल है इस बात की शंका उसके मन में पैदा होती है। माथुर से पहले टगर के पति ने भी यही कहा था कि वह सुन्दर है और वह टगर से प्यार करता है, पर उसने टगर को धोखा दिया इस कारण ही टगर के मन में माथुर के प्रति भी सन्देह उत्पन्न होता है।

माथुर को भी टगर के बारे में शंका उत्पन्न होती है। माथुर के जीवन में भी टगर के पहले तीन स्त्रियाँ आकर चली गयी हैं पर उसे अपने जीवन में स्वास्थ्य महसूस नहीं हुआ है उसके जीवन की जो शोकान्तिका है उसे देखते हुए उसके मन में भी टगर का प्यार छल तो नहीं है ? टगर सचमुच सबकुछ भूलकर मेरे पास आयी है ? ऐसी शंकाएँ उसके मन में खडी होती है।

नाजिम इस पात्र को भी टगर के बारे में शंका दिखायी देती है। माथुर को मेजर पुरी से गिरफ्तार करने के बाद टगर नाजिम के साथ उसके घर रहने जाती है पर नाजिम को मालूम है कि टगर माथुर और ठाकुर के साथ रह चुकी है। टगर

जिसके साथ भी रही है उसका अच्छा नहीं हुआ। पर इसके बाद भी टगर का पहला पति शेखर नाजिम के यहाँ सीमा-प्रदेश देखने के बहाने आता है और नाजिम को मालूम हो जाता है कि यही टगर का पहला पति रह चुका है। तब नाजिम के मन में टगर के प्रति शंका उत्पन्न होती है। क्या टगर अब भी अपने पति से प्यार करती है ? इस बात को लेकर नाजिम के मन में शंकाएँ रहती हैं। क्या टगर शेखर के प्रति अब भी आदर भाव रखती है।

"बन्दिनी" नाटक के कालीनाथ राय एक जमींदार हैं। वे श्रध्दालू हैं। एक दिन उन्हें रात के समय सपना आता हैजिससे कि वे सुबह उठने पर अपनी छोटी बहू को देवी माँ समझने लगते हैं। उनके अनुसार देवी माँ ने उन्हें खुद बताया है कि उनकी बहू उमा के रूप में खुद देवी माँ उनके घर में वास कर रही है तब कालीनाथ राय उमा को देवी माँ ही समझने लगती है वे उमा के पैर छूते हैं - "देख क्या रहे हो सुरेन्द्र। इन्हें प्रणाम करो। ये साक्षात जगदम्बा है। इनके चरण छूओ।" यहाँ कालीनाथ राय में भ्रान्ति पायी जाती है। अपनी बहू उमा को बहू न मानकर वे देवी माँ समझने लगते हैं।[48]

इस नाटक में हम देखते हैं की कुछ दिनों बाद टगर भी अपने आपको देवी माँ ही समझने लगती है। इतना ही नहीं खुद देवी माँ ही हूँ यह समझकर वह दुखी लोगों का दुख, दर्द मिटाने के लिए उन्हें अपना चरणामृत भी देती है। और यह भ्रम कर लेती है कि उसकी चरणामृत के कारण ही लोग अच्छे हो रहे हैं। अपने आपको वह काली माँ, महिषासुरवर्दिनी, महाकाली, महाचण्डी आदि समझने लगती है। यहाँ उमा का भ्रम ही दिखायी देता है। भ्रान्ति के कारण ही उमा अपने आप को देवी समझती है।

ईर्ष्या

आचार्य रामचन्द्र शुल्क के अनुसार - "जैसे दुसरे के दु:ख को देखकर दु:ख होता है वैसे ही दुसरे के सुख या भलाई देखकर भी एक प्रकार का दु:ख होता है, जिसे ईष्या कहते है।"[49] ईर्ष्या, लालच, अभिमान और नैराश्य के कारण होती है। एक के पास कोई वस्तु है और दुसरे के पास नहीं है तो वह दूसरा व्यक्ति

इस बात के लिए ईर्ष्या प्रकट करता है। जैसे "काश। वह वस्तु उसके पास न होकर हमारे पास होती तो कितना अच्छा होता।" आशा, पुरूषार्थ, स्पर्धा आदि के कारण ईर्ष्या उत्पन्न होती है। "सम्बन्धियों, बालसखाओं, सहपाठियों और पड़ोसियों के बीच ईर्ष्या का विकास अधिक दिखायी देता है। ईर्ष्या व्यक्ति विशेष से होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "ईर्ष्या एक संकर भाव है। ईर्ष्या एक अनावश्यक विकार है, इससे उसकी गणना मूल विकारोंका में नहीं हो सकती। यह यथार्थ में कई भावों को विचित्र मिश्रण से संघटित एक विषय है।

डॉ॰अनीला एक परित्यक्ता नारी है। सतीशचन्द्र शर्मा ने उसका त्याग किया है। अनीला का कोई दोष नहीं है। पर वह गवार और अनपढ है यही कारण लेकर सतीशचन्द्र उसका त्याग करता है पर अनीला इस अपमान को सह नहीं सकती वह अपनी बेटी नन्ही शशि को लेकर भाई के पास आती है। मधुलक्ष्मी से डॉ॰अनीला बन जाती है। इसका कारण सिर्फ ईर्ष्या है। उसके मन में सतीशचन्द्र के प्रति अपमान के कारण ईर्ष्या पनपती है।

सतीशचन्द्र की दूसरी पत्नी अस्पताल में दाखिल होती है तो अनीला के भीतर ईर्ष्या की ज्वाला ओर ही पनप उठती है क्योंकि जिसने अनीला का संसार उजाड़ा है वह खुद शादी करके सुख की जिंदगी बीता रहा है। सतीशचन्द्र को सुखी देखकर उसे दुख पहुँचाने के लिए ही अनीला मरीजा को मार ड़ालना चाहती है। सईदा के वक्तव्य से यह बात स्पष्ट होती है। वह कहती है - उपर से वह जितने जोर से हँसती है, भीतर उतने ही जोर से उबलती है।

मरीजा के प्रति भी अनीला के मन में ईर्ष्या है क्योंकि जो उसका अपना पति था उसे दूसरे किसीका होते देखना इतना आसान नही। तभी तो अनीला ऑपरेशन करते समय भी मरीजा की खाल चिमटी में लेकर चूप रहती है उसे छोड़ती नहीं यहाँ मरीजा को मार डालने की ईर्ष्या ही दिखायी देती है।

"टगर" नाटक की टगर सावली होने पर भी सुन्दर है, आधुनिका है। नाक-नक्श अच्छे हैं। वह मोहक और आकर्षक नारी है। उसके आस-पास पुरूष

मँडराते रहते हैं। टगर एक-के-बाद एक पुरूष को अपने जाल में फँसाती है। यह देखकर विमला के मन में टगर के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न होती है। विमला डॉक्टर की पत्नी है। डॉक्टर टगर के यहाँ पेशेन्स खेल रहे हैं यह देखकर विमला को गुस्सा आता है। वह कहती है यह काम तो आप मेरी आँखों के सामने बैठकर भी कर सकते हैं। हाँ, यह बात दूसरी है कि मेरे पास न तो टगर जैसा रूप है और न वैसी बातें करने की आदत है।

विमला टगर जैसी सुन्दर नहीं है, ढंग से बाते करना भी उसे नहीं आता। ये सब बातें टगर के पास है इस कारण विमला टगर से ईर्ष्या करती है। टगर विमला को साथ लेकर घूमने जाना चाहती है तब भी विमला को यह बात जँचती नहीं। वह टगर से कहती है - -क्षमा करो, बहन। यह मादक, शृंगार, यह मोहिनी रूप पुरूष के साथ ही शोभा देता है। ठाकुर साहब नहीं हैं। तो आप माथुर साहब के साथ जा सकती है। इन्हें भी घूमने का बहुत शौक है। शरारत से विशेषकर सुन्दरी नारी के साथ। इन बातों से भी विमला की टगर के प्रति ईर्ष्या ही प्रदर्शित होती है।

टगर ने ठाकुर के साथ माथुर पर भी डोरे डालने शुरू किए हैं यह देखकर भी विमला के मन में टगर के प्रति ईर्ष्यात्मक घृणा पैदा होती है - वह माथुर साहब से कहती है - पड़ोस के घर में जब आग लगती है तो अपना घर भी सुरक्षित नहीं रहता।....मुझे आप लोगों के लक्षण भी बहुत शुभ नजर नहीं आते।

विमला हर वक्त अपने पति डॉक्टर के साथ रहती है टगर की नजरों से पति को बचाना चाहती है। उसे अपने पति पर विश्वास है पर टगर जैसी नारी पर नही।

टगर परित्यक्ता नारी है। एक साहित्यिक शेखर ने उसे त्याग दिया है। वजह बस इतनी है कि टगर पढ़ी लिखी नहीं है, साहित्य के बारे में कुछ भी नहीं जानती। इस बात पर शेखर एक दिन टगर को घर से बाहर निकाल देता है। टगर भी इस अपमान को नहीं भूलती। उसका क्रोध पनपकर ईर्ष्या में बदल

जाता है। इस ईर्ष्या के कारण ही वह अपने जीवन का पथ बूरे मार्गो पर मोड़ लेती है। जिस वजह में उसे अपमानीत होना पड़ा यह सब पा लेती है। वह कहती भी है - "मैंने खूब साहित्य पढ़ा···कक्का, कामू और सात्रे को भी पढ़ा। बाते करनी भी सीखीं। जो तब नहीं कर सकी थी, अब किया। अब चाहू तो साहित्यिक पति को भी खरीद सकती हूँ।"

पुरूष के प्रति ईर्ष्या होने के कारण ही वह अपने जीवन में आनेवाले हर पुरूष से बदला लेना चाहती है। एक पुरूष ने धोखा देने के बाद हर पुरूष को वह धोखा देना चाहती है। वह खुद नाजिम से कहती है कि यह सब मैंने जानबूझकर किया है - ईर्ष्या के कारण उसके मन में प्रतिहिंसा पैदा होती है। टगर कहती है - "सोचा था, पुरूष जाति से बदला लूंगी। उसने एक बार छोड़ा है, मैं बार-बार पुरूषों को छोडूंगी। एक के बाद एक जो मैं इन भ्रष्टाचारियों को फंसाती चली गयी, वह मात्र संयोग नहीं था, नाजिम साहब।"

शेखर से ईर्ष्या होने के कारण टगर जिन्दगी भर ईर्ष्या की आग में जलती नजर आती है। जिंदगी में अनेवाले पुरूषों को भी जलाती है और खुद भी जल जाती है। पुरूष के कारण अपना जीवन उजड़ जाने के बाद किसी भी पुरूष को सुखी देखना पसन्द नहीं करती।

नाजिम "टगर" नाटक का एक गौण पात्र है। वह पहले श्रेणी का एक अधिकारी है। उसकी पत्नी मर चुकी है। टगर जिसे अपने स्वार्थ के खातिर ठाकुर और माथुर ने इस्तेमाल किया है। उस टगर को नाजिम अपने पास रख लेता है। उसके साथ शादी करना चाहता है। इसी बीच शेखर और माथुरी सीमावर्ती प्रदेश देखने के लिए आते हैं। नाजिम को मालूम होता है कि शेखर ही टगर का साहित्यिक पति है। शेखर की प्रखर बुध्दि और तेज देखकर नाजिम के मन में शेखर के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न होती है।

नाजिम : किंचित कठोर तो ये है शेखर। देखने में तो अच्छे खासे भले आदमी मालूम होते हैं, लेकिन मैं इनकी आंखों में पढ़ सकता हूं कि ये क्या है ?

टगर : **तुम्हें ईर्ष्या होती है ?**

नाजिम : हतप्रभ होकर ईर्ष्या इस लेखक से, जो एकदम शैतान है।

टगर : तुम्हें सचमुच ईर्ष्या हो रही है, घोर ईर्ष्या। लेखक के रूप में शेखर सचमुच महान है।"[50]

टगर शेखर की महानता का समर्थन करती है तो नाजिम को और भी दुख होता है उसके मन में शक पैदा होता है कि कही टगर अब भी शेखर के प्रति प्यार तो नहीं रखती।

शेखर वहाँ से जाते वक्त नाजिम के पास आता है और टगर शेखर को द्वार पर छोडने के लिए चार कदम आगे जाती है तब भी नाजिम के मन में ईर्ष्या पैदा होती है। वह कहता है कि तुम्हें उसके पीछे नहीं जाना चाहिए था। वह शैतान है। एक के बाद एक नारी को लुभाना और छोडना उसका पेशा है। क्या आज के साहित्यकारों का यही·····? आज के साहित्यकारों का यही पेशा है क्या? स्त्रियों के पीछे पड़ना और उन्हें इस्तेमाल करके छोड़ देना ? यहीं बाते वह टगर से पूछना चाहता है। इससे टगर के मन में शेखर के प्रति घृणा पैदा हो यही चाहता है। शेखर के अच्छे गुण देखकर नाजिम के मन में ईर्ष्या पैदा होती है।

माथुर एक पंजीकृत अधिकारी है। पी·डब्ल्यू·डी· के सब-डिवीजनल आफिसर है। "टगर" नाटक मे माथुर एक गौण पात्र है। ठाकुर के पास टगर जैसी सुंदर, आकर्षक, मधुर स्वर वाली स्त्री मौजुद है। वह हर वकत ठाकुर के पास रहती है। ठाकुर टगर से काफी बड़े हैं। पर भी टगर उनसे प्यार करती है। ठाकुर के सिर पर तेल मलती है। उसकी हर बात मानती है। यह देखकर माथुर के मन में ठाकुर के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न होती है।

माथुर का मन वास्तव में टगर के प्रति खींच जाता है। टगर उसे अच्छी लगती है। पर टगर ठाकुर से प्रेम करती है यह भी माथुर जानता है। "काश टगर भी मुझसे प्यार करती" कहना चाहता है और टगर ऐसा नहीं करती इस कारण वह ठाकुर से ईर्ष्या करता है। माथुर जानता है कि ठाकुर टगर से बहुत बड़े हैं तो टगर उनके साथ कैसे खुश रह सकती है ? यही सवाल उनके मन में उठता है। केवल बातों से स्त्री को जीता नहीं जा सकता। ईर्ष्या के कारण वह खुद टगर से पूछते हैं कि ठाकुर साहब उम्र में तुमसे बहुत बड़े हैं। क्या तुम सचमुच उनके साथ खुश हो ?" माथुर साहब जिसे अपना मित्र मानते हैं पीठ-पिछे उसीकी बगावत करते हैं। माथुर साहब परेशान हैं यह जानकर टगर उसका दिल बहलाने का प्रयत्न करती है पर माथुर उसकी भाषा समझ नहीं सकते। तो कहते हैं "ओह टगर, वही लोकगीतों की भाषा। मुझे दुख है, मैं ठाकुर साहब की तरह बातें नहीं कर सकता। मैं....मैं...स्मग्लर नहीं हूँ।

ठाकुर साहब के प्रति ईर्ष्या होने के कारण ही माथुर बार-बार ठाकुर की बुराइयों को उजागर करता रहता है।

घृणा

"घृणा मूल प्रवृत्तिहै।" "अरूचिकर विषयों के उपस्थित होने पर अपने ज्ञानपथ से उन्हें दूर रखने की प्रेरणा करनेवाला जो दुःख होता है उसे घृणा कहते हैं।"[51] घृणा के स्थूल और मानसिक दो भाग होते हैं। स्थूल विषयों में आँख, कान, और मोटे ओठ से सुसज्जित चेहरे को देखकर ही दृष्टि फेर लेते हैं। दुर्गंधी का अनुभव पाते ही नाक पर रूमाल लगा लेना घृणा ही है। मानसिक भागो में निर्लज्जता की कथा सुनते ही, कितनी रोचक क्यों न हो हमे घृणा लगती ही है। क्योंकि उसका सम्बन्ध हमारे भावों तथा संस्कारों, आदर्शों से जुडा है। दुर्जनों की गाली सुनकर सामान्य लोग इस पर क्रोध प्रकट करते है पर साधू के मन से क्रोध प्रकट नहीं होता तो उसके मन में घृणा पैदा होती है। वेश्यागमन, जुआ, मद्यमान, स्वार्थपरकता, कायरता, लालसा, पाखण्ड, अनाधिकार चर्चा, मिथ्याभिमान, आदि के कारण सामान्य मनुष्य में घृणा पैदा होती है। जिस बात से हमें घृणा होती है, हम चाहते हैं

वह बात न हो।

"टगर" नाटक का स्त्री पात्र विमला टगर से घृणा करती है। "टगर" एक ऐसी युवती है जो हर पुरूष को अपने मोह जाल में फसा लेती है। उसका सौंदर्य भी आकर्षक है तो विमला उससे घृणा करने लगती है। टगर उसे कहती है कि देखो नाजिम एक शासक है पर मैंने अपने सौंदर्य से अपना काम कर लिया है। सौंदर्य का और सुन्दर स्त्री होने का यही फायदा है। तब विमला विद्रुप सी होकर कहती है - इसे तुम लाभ कहती हो, यह लानत है।" विमला के पति डॉक्टर का चेहरा भी टगर की असलियत जानकर घृणा से खींच जाता है।

"टगर" अपने पति से घृणा करती है। पति शेखर ने उसका त्याग किया है तो इस अपमान का बदला वह सारे पुरूष जाति से लेना चाहती है। पति शब्द से ही उसे नफरत होती है। कोई भी उसे शादी के बारे में पूछ लेता है तो वह ठहाका लगाकर हँसती है, पर वास्तव में इसके पीछे घृणा छिपी है। "टगर" शेखर के साथ साहित्यिक चर्चा नहीं कर सकती क्योंकि वह गँवार है। इसी कारण शेखर उसका त्याग करता है पर इसी घृणीत भाव के कारण वह ठाकुर के पास रहकर साहित्य के बारे में सब कुछ जान जाती है, किताबे पढ़ती है। वह खुद नाजिम से कहती है कि उसने मुझे एक बार छोड़ा है, मैं बार-बार पुरूषों को छोड़ूंगी। एक के बाद एक जो मैं इन भ्रष्टाचारियों को फसाती चली गयी, वह मात्र संयोग नहीं।

क्रोध

क्रोध मानव मन में निहीत एक विशिष्ट मनोविकार है। मनुष्य के जीवन की सुख और दुख दो प्रमुख अनुभूतियाँ हैं। इनमें से जब मनुष्य को दुख की अनुभूति का एहसास होता है तब उसके मन में क्रोधे मनोविकार उद्‌भूत होता है। किसी शत्रु, किसी अहितकारी . अथवा अशिष्ट की चेष्टाओं और कार्यों से तथा अपने अपमान आहित एवं बड़ो की निंदा, अवलहेलना आदि के कारण मन में जो मनोविकार उत्पन्न होता है उसे क्रोध कहते हैं। क्रोध के कारण मनुष्य का मन प्रक्षुब्ध होता

है और उसके मन में प्रतिशोध या बदला लेने कि भावना दृढ होती है और उस भावना के कारण वह मानव जीवन में व्यवहार करने लगता है।

विष्णु प्रभाकर के "डॉक्टर" नाटक का एक प्रमुख नारी पात्र अनीला है। यह अनीला परित्यक्ता है। उसका पती सतीशचन्द्र शर्मा उसे इसीलिए त्याग देता है कि वह अनपढ गवार नारी है। उसके त्याग देने पर सतीशचन्द्र दूसरा विवाह करता है। लेकिन दुर्भाग्यवश वह पत्नी बीमार पडती है और एक दिन बीमारी का इलाज करने वह डॉ॰अनीला के अस्पताल में दाखिल हो जाती है। लिस्ट में दर्ज किया मरीजा का नाम देखकर वह जानती है कि वह उसके पति की ही दूसरी पत्नी है। इस दूसरी पत्नी को मरीजा के रूप में देखकर वह एकदम गुस्सा करती है। मरीजा को देखकर उसके मन में क्रोध मनोविकार उत्पन्न होता है। डॉ॰अनीला उस समय अपनी तेज आवाज में पूछती कि इसे किसने दाखिल किया ? उस समय अनीला और सईदा में जो वार्तालाप होता है उससे यह स्पष्ट होता है कि अनीला के मन में क्रोध मनोविकार उत्पन्न हुआ है। निम्नलिखित वार्तालाप दृष्टव्य हैं -

अनीला : (एकदम तेज) मैं पूछती हूँ कि इसे किसने दाखिल किया ? किसकी आज्ञा से·····

सईदा : क्षमा करें दीदी। यह सब दादा ने किया है। एक बार तो उन्होंने मना कर दिया था पर····"

अनीला : (पूर्वतः तेज) मैं कहती हूँ कि इन्हें निकाल दो।"[52]

"डॉक्टर" नाटक में अनीला के क्रोध का दूसरा उदाहरण यहाँ दिखायी देता है जब सनकी मरीजा नीरू डॉक्टर अनीला के बारे में अस्पष्ट शब्दों में कहती है कि नयी मरीजा डॉ॰अनीला का कोई रिश्तेदार होगी अर्थात सौत होगी। नीरू के इस वक्तव्य पर डॉ॰अनीला इतनी कृध्द हो जाती है कि वह अपनी सहयोगी डॉक्टर मिसेज सईदा से कह देती है कि नीरू को आज ही अस्पताल से छुट्टी दे दी जाए।

प्रस्तुत नाटक में जब डॉक्टर अनीला उसके पति के दूसरे पत्नी को मरीज के रूप में देखती है और उसे मालूम होता है कि उसके दादा भाई ने ही उसे नर्सिंग होम में दाखिल करवाया है तब अनीला दादा के प्रति भी अपना क्रोध प्रकट करती है। जब दादा अनीला से कहता है कि अनीला डॉक्टर है तब वह व्यंग्य से कहती है कि मैं डॉक्टर कहां हूँ ? डॉक्टर तो आप है, मैं मशीन हूँ।" जब दादा डॉक्टर अनीला से कहता है कि यह मशीन टूटते जीवन को जोड़ने का कार्य करती है। मौत कि छाया को जीवन की मुस्कान में बदल देती है उस समय अनीला क्रोधित होकर कहती है -

तब **अनीला** : (तीव्र होकर पूछती है) किसी के चलाने पर ? दादा कहते है

: गुस्सा आया अनीला ? गुस्सा मत करो। मैं उसे बुलाने नहीं गया था।

प्रस्तुत नाटक में डॉ॰अनीला की क्रोध कि मनोदशा तब दिखायी देती है जब सतीशचन्द्र शर्मा गोपाल के जरिए अनीला के लिए रसगुल्ला के डिब्बे और दोडलियाँ रामू के हाथों भेज देते हैं। एक डिब्बे में रसगुल्ला और दूसरे में केला, लंगर, अननस होते हैं। इन डिब्बे को देखकर भी डॉ॰अनीला क्रोधित होती है और नर्सिंग होम के सेवक रामू से कहती है कि - "ये सब ले जाओ" साथ ही साथ अनीला गुस्से मे रामू से यह भी कहती है कि "कल को कोई रूपया पैसा देगा कुछ और देगा तो तू ले आयेगा ?" तुझे शर्म नहीं आयी ? मैं कहती हूँ तू जाता क्यों नहीं ? निकल यहाँ से।" कहकर उसे सामने से हटाती है। तत्पश्चात नाटककार ने यह दिखाया है कि डबिया वापस भेजने से सतीशचन्द्र के बेटे गोपाल को बुरा लगेगा यह जानकर रामू वह सब चीजे आधी-आधी खाता है यह जानकर भी डॉ॰अनीला क्रोधित होती है और रामू कहता है गोपाल ने पूछा तो मैंने कहा कि दीदी ने खा लिया है तब अनीला क्रोधित होती है -

"डॉक्टर" नाटक में दादा नामक पात्र में भी क्रोध पाया जाता है। डॉ॰अनीला हॉस्पीटल से बाहर गयी हुई है। तब अनीला का पति सतोशचन्द्र शर्मा जिसने अनीला का त्याग किया है। वह अपनी दूसरी पत्नी मरीजा के लेकर संयोग से डॉ॰अनीला के ही अस्पताल में आ जाता है। दादा सईदा से उनका नाम सुनते ही कहते हैं कि उन्हें इस अस्पताल में जगह नहीं है, उन्हें वापस भेज दो पर सईदा ऐसा नहीं करती तो दादा को गुस्सा आता है वह तेज होकर कहते हैं - "जाओ···।" फिर भी सईदा उन्हें अस्पताल नियमों के बारे में बताती है तो दादा अपना गुस्सा रामू नाम के सेवक पर उतारते हैं - चीखकर " तुम नहीं जाओगे।"

तत्पश्चात नीरू भी मरीजा के बारे में अनीला के साथ कुछ सम्बन्ध हैं और मरीजा का बेटा और शशि की आँखे इनमें साम्य कैसा है ? डॉ॰अनीला अस्वस्थ क्यों रहती है ? ऐसे सवाल दादा से पूछना चाहती है तब भी दादा को गुस्सा आता दिखायी देता है और वे नीरू से कहते हैं - "तुम लोग अपने-अपने घर क्यों नही जाते ?" उसके बाद भी नीरू सच्चाई जानना चाहती है तो, दादा को क्रोध आता है - वे जोर से कहते हैं "- "मैं कहता हूँ, तुम अपने कमरे में चली जाओ, यहाँ से चली जाओ···।"

"टगर" नाटक में नाजिम 27-28 वर्ष के प्रभावशाली युवक है। नाजिम प्रथम श्रेणी के अधिकारी हैं। उनकी पत्नी मर चुकी है। नाटक के आरम्भ में ही उनकी क्रुध्द आवाज सुनाइ देती है। ठाकुर और टगर उनके कमरे में ठहरे हुए हैं। कमरा खाली करने के लिए बार-बार कहने पर भी वे खाली नहीं कर रहे है तो नाजिम साहब को गुस्सा आता है।

आवाज : (चीखकर) क्या वे अभी तक यहीं है ? मैं उनको जाने के लिए कह गया था। उन्हें कल ही यह बंगला छोड़ देना था। यहाँ भीड़, यह शगल, ताश, पीना, पिलाना - यह सब मैं नहीं सह सकता, नहीं सह सकता···उन्हें जाना होगा···ऐ। मेरा मुँह क्या देख रहे हो ? उन्हें जाकर साफ-साफ कह दो कि आज हमारे मेहमान आ रहे हैं । उन्हें जाना होगा····।"[53]

नाटक के तृतीय अंक में नाजिम टगर के साथ शादी करना चाहता है तो डॉक्टर उन्हें सावधान करता है कि टगर अच्छी नारी नहीं है वह तीन-तीन पुरूषों के साथ रह चुकी है। उसके साथ शादी न करे। ठाकुर के साथ रहते हुए उसने उनके आयु कि भी चिन्ता नहीं कि इस तरह का समर्थन नाजिम देते है तो डॉक्टर कहते हैं कि मर्द की आयु नहीं देखी जाती, डॉक्टर होने के बावजूद भी ऐसा कहने पर नाजिम को क्रोध आता है। वे क्रुध्द होकर कहते हैं - "यह आप कहते हैं ? आप डॉक्टर हैं लेकिन नहीं। सबसे पहले आप कट्टर पंथी हिन्दू हैं, जो केवल अपना स्वार्थ देखता है - इस लोक में भी परलोक में भी।"

नाजिम टगर से शादी करना चाहता है पर बीच में ही शेखर आ जाता है तो नाजिम को शक होता है कि टगर अब भी शेखर से प्यार करती है। तब भी नाजिम क्रुध्द होताा है वह चीखकर कहता है - "तो मैं विश्वास नहीं करूंगा, कभी नहीं करूंगा, कभी नहीं करूंगा। ऐसा नहीं हो सकता। यदि ऐसा है तो···।"[54]

टगर नाजिम को बताती है कि शेखर के प्रति उसके मन में अब भी प्यार है। शेखर का अपमान वह नहीं सह सकती। उसकी निंदा करने का अधिकार सिर्फ मुझे ही है। तो इस बात पर नाजिम अपना क्रोध कुर्सी तथा अन्य चीजों पर उतार देता है। कुर्सियों को जोरों से मेज के अन्दर खिसकाता है। जो कुछ सामने आता है उसे फेंक देता है। इन बातों से भी क्रोध ही प्रकट होता है।

तत्पश्चात नाजिम डॉक्टर को यही समझाना चाहते हैं कि टगर को माथुर और ठाकुर ने अपने फायदे के लिए विवश किया था। तभी उसे जबर्दस्ती उनके साथ रहना पडा है, वरना टगर एक अच्छी स्त्री है। इस बात को डॉक्टर नहीं मानते और टगर ठाकुर जैसे 50 साल के बूढ़े के साथ भी रह चुकी है यह बताते हैं तो नाजिम इस बात पर क्रुध्द होते हैं।

"बन्दिनी" नाटक में कालीनाथ राय के स्वप्न के अनुसार उमा को देवी माँ मानकर उसे पूजागृह में बन्दि बनाया जाता है। किसीसे मिलने जुलने पर पाबन्दी लगायी जाती है। उसकी पूजा-अर्चा की जाती है। पहले-पहले उमा अपने आपको देवी माँ मानने के लिए तैय्यार नहीं थी पर बाद में वह इतनी अंधविश्वासी बन

जाती है कि खुद को देवी माँ समझने लगती है। उमा का पति सुरेन्द्र उमा से बेहद प्यार करता था। उमा के साथ उसने प्यार भरे सपने देखे थे। उमा अपने आपको देवी माँ कहने लगती है तो सुरेन्द्र बार-बार क्रोधित होता है।

सुरेन्द्र उमा से बेहद प्यार करता है पर भी उमाउसे पूछती है "मैं आपके मनपसन्द नहीं हूँ" तब सुरेन्द्र के दिल को ठेंस पहुँचती है वह आवेश में आता है और कहता है - "हा, तुम मेरे मनपसन्द नहीं हो, नहीं हो, हजार बार नहीं हो।" जब उमा अपने आपको देवी माँ मानने लगती है तब सुरेन्द्र उसे समझाने आता है। खुद को देवी माँ कहना अन्धविश्वास, मात्र दम्भ है यही समझाना चाहता है पर उमा नहीं समझ पाती वह सुरेन्द्र के साथ घर से बाहर नहीं जाना चाहती तो सुरेन्द्र कहता है मैं तुम्हे उठाकर ले जाऊंगा।

सावित्री का बेटा अनु ज्वर से तड़प रहा है। उमा कभी उसे बेहद प्यार करती थी पर अब देवी माँ बनने के बाद वह अनु को वैद्यजी की दवा देने से इन्कार करती है तो उसे अपनी चरणामृत से अच्छा करने का वादा करती है तब भी सुरेन्द्र क्रोधित होता है, वह कहता है -"(पास आकर) नहीं, नहीं, कुछ नहीं हो रहा। यह सब ढोंग हैं, झूठ है। आप झूठे हैं। आपके विश्वास झूठे हैं। आपकी देवी झूठी है1 वह अनु की प्राणरक्षा नहीं कर सकती। वह जा रहा है। अन्धविश्वासी मूर्खो, वह जा रहा है।"[55] कालीनाथ राय, पुरोहित, उपेन्द्र सब का गुस्सा वह उमा पर उतार देता है। सुरेन्द्र अनु पर अपने बेटे से ज्यादा प्यार करता था। अन्धविश्वास के कारण उसे जाता देखकर सुरेन्द्र को दुख होता है वह तीव्र होकर कहता है - "यह देवी नहीं है। यह बन्दिनी है। अन्धविश्वासों की दिवारों में घिरी एक बन्दिनी।"

इतना सब करने के बाद भी अनु की जान अन्धविश्वास के कारण चली जाती है। अन्धविश्वास की वेदी पर अनु की बली चढ जाती है तब सुरेन्द्र अपने पिता पर भी क्रोध प्रकट करता है। वह कहता है - "पिताजी, आपके झूठ ने, आपके अन्धविश्वास ने आपके ही वंश का नाम शेष कर दिया। अब नरक की यातनाएँ ही आपका हिसाब करेगी।"

सुरेन्द्र अन्धविश्वास पर भरोसा न करनेवाली सरल प्राण व्यक्ति है इसीलिए वह अन्धविश्वासों में जकड़े रहनेवालो पर बार-बार क्रोधित होता है।

सावित्री में भी क्रोध दिखायी देता है। उमा सावित्री के बेटे अनु को दवा देने नहीं देती तो तीन बार सावित्री वैद्यजी को बुला लाती है पर भी उमा नही मानती। तो ज्वर के कारण अनु को जाते हुए देखकर सावित्री उमा पर क्रोधित होती है वह चीखकर कहती है कि "यह देवी नही है, अरे आप लोगों को क्या हो गया है ? कुछ तो विवेक से काम लो। यह देवी नहीं है। अपने बेटे के कारण अंधविश्वास रखनेवाले उमा और कालीनाथ राय के प्रति भीसावित्री के मन में क्रोध उत्पन्न होता है। वह कहती है "मैं अब किसीकी भी चिन्ता नहीं करूंगी, मेरे बेटे को दवा देने से कोई नहीं रोक सकता। सावित्री उमा की तरफ घृणित नजरों से देखने लगती है।

जड़ता

जड़ता वास्तव में एक विशिष्ट मनोविकार है जिसमें मनुष्य एक ऐसी अवस्था में रहता है कि उसे अपने कर्तव्य की या कार्य की विशेष सूझबूझ नहीं रहती है। वह एक तरह से मशीन की तरह जड़ बन जाता है। उसके एक तरह के कार्य कलापों में कुछ क्षण के लिए निर्जीवता या अचेतनता आ जाती है। साहित्य में एक संचारी भाव को जड़ता कहा जाता है।

"डॉक्टर" नाटक में विष्णु प्रभाकरजी ने नाटक के प्रारम्भ में ही "मशीन" शब्द का प्रयोग करते हुए मानव के मन में निहीत जड़ता को अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत नाटक का नारी पात्र नीरू जो कुछ मात्रा में पागल है, मनुष्य को मशीन के रूप में देखने के लिए विवश है। जिस प्रकार मशीन मनुष्य की निर्मिती है और मनुष्य के चलाने और बन्द करने पर वह चलता है या रूकता है। उसी प्रकार मनुष्य का दिल भी मशीन बन गया है। इस संदर्भ में नीरू के विचार को प्रकट करते हुए नाटककार ने दादा और सईदा के वार्तालाप से यह बताया है कि मनुष्य का दिल मशीन का बना हुआ है और हम सब सहज भाव से कुछ नहीं करते बल्कि हिसाब लगाते हैं, और इसीलिए नीरू कहती है कि, हमेशा हिसाबदां

पूरे पागल होते हैं।

प्रस्तुत नाटक में यह भी बताया गया है कि मनुष्य की ऐसी आदत है जो स्वभाव का दास बन जाता है। यह स्वभाव ही एक तरह की मशीन है। यहाँ नाटक का एक पात्र दादा यह बताते हैं कि यहाँ सब लोग किसी न किसी रूप में मशीन की बाते करते है, क्या इस नर्सिंग होम में सब काम मशीन की तरह होता है ? क्या अनीला मशीन बन गयी है ? अर्थात नाटककार ने यह भी दर्शाया है कि जिस प्रकार मशीन निर्विकार होती है उसी प्रकार आज का मानव और उसके दिल भी एक तरह के मशीन बन गये हैं। लेकिन मानव द्वारा बनायी गयी मशीन और इन्सान का दिल इन दोनों में अंतर है। यद्यपि इन्सान का दिल मशीन है ऐसा माना जाए तो भी यह एक ऐसी मशीन है कि जो शोर को संगीत में बदल लेती है।

"डॉक्टर" नाटक के तीसरे अंक में ऑपरेशन के समय यह दिखाया गया है कि डॉ॰अनीला मरीजा को देखकर मुस्कराती है चिमटी से उसके पेट की खाल पकडती है लेकिन उस समय वह यकायक खो जाती है। वह खाल को चिमटी से पकड़े रहती है और कुछ क्षण के बाद सईदा के सचेत करने पर वह चिमटी छोड़ देती है। उस समय प्रथमतः उसका हाथ कांपता है लेकिन कुछ क्षण में ही वह दृढ बन जाती है और ऑपरेशन सफल हो जाता है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ऑपरेशन के समय कुछ क्षण रूकना और यकायक खो जाना जड़ता की ही स्थिति है। नाटककार ने डॉ॰अनीला के मन को अच्छी तरह से जाना है।

"टगर" नाटक में पहली बार जड़ता टगर में पायी जाती है। ठाकुर एक लोकगीतों का व्यापार करनेवाला। देश के प्रति प्यार और आस्था जतानेवाला व्यक्ति दिखायी देता है। पर मेजर पुरी के साथ वे सीमा प्रदेश में चलने वाला तस्कर व्यापार देखने के लिए जाते हैं और मेजर पुरी की गोली से ही मारे जाते हैं पुरी कहते हैं कि - "मुझे अफसोस है कि वे किसी तस्कर की गोली से नहीं, मेरी गोली से मारे गये हैं।" यह बात सुनकर टगर कि अवस्था प्रतिमा के समान

होती है। उसमें जड़ता आ जाती है। वास्तव में ठाकुर एक आन्तर्राष्ट्रीय दल के सदस्य थे। और आज पुरी साहब कहते हैं कि उनके बारे में यह खबर टगर ने ही मुझे दी थी यह बात सुनकर डॉक्टर और विमला की अवस्था भी वैसी ही हो जाती है। उनके भावों में भी जड़ता दिखायी देती है।

तत्पश्चात माथुर अपने दुःख की कहानी टगर से बताता है। कुसुम माथुर की प्रेयसी आत्महत्या कर लेती है। लोग उसके बारे में कुछ भी बकने लगते हैं। तब माथुर भी इन हालातों का सामना नहीं कर सकता। वह किसीसे मिलना-जुलना पसन्द नहीं करता, टगर के साथ घूमने के लिए भी नहीं जाना चाहता। इस थके हुए जीवन में उसे एक टगर का ही सहारा दिखायी देता है और वह टगर से कहता है - "···मुझे ऐसा लगता है कि तुम मुझे जबर्दस्ती अपने साथ खींचकार ले चलो····।" यहाँ एक तरफ माथुर की जड़ता ही दिखायी देती है।[56]

टगर पति से परित्यक्ता होने के बाद माथुर, ठाकुर और नाजिम तीन पुरुषों के साथ रहती है पर उसे ऐसा करते हुए अपने आप पर ही ग्लानि आती है वह जीवन अब और बहना नहीं चाहती वह अब थक गयी है। प्रतिशोध की आग में उसने औरों को भी जलाया है और खुद भी जलती रहती है पर अब वह ताकद उसमें नहीं रही है तो वह हालात से समझोता करती है। अब उसमें जड़ता आ गयी है - "उसे पा सकूंगी, यह आशा मैं नहीं करती पर इतने खेल खेलकर अब किसी और की होने की आशा भी मुझे नहीं है। (गहन मौन) भूतकाल बीज जाता है, पर मिटता नहीं।"[57]

टगर को अब जीवन में की हुई भूलों का पछतावाहोता है। उसकी आत्मा उसे कुरेदती हुई दिखायी देती है। इसीलिए उसमें जड़ता पायी जाती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षता कहा जा सकता है -

1· श्री·विष्णु प्रभाकर के विवेच्य मनोवैज्ञानिक नाटकों में मनोविज्ञान के विभिन्न तत्वों का यथोचित संन्निवेश हुआ है।

2· विवेच्य नाटकों में मानव मन के विविध मनोविकारों नाटककार ने बड़ी कुशलता से चित्रित किये हैं।

3· विवेच्य नाटकों मे मुख्यतः प्रेम, वात्सल्य, उत्साह, हँसी, लज्जा और ग्लानि, स्वप्न, भय और चिन्ता, भ्रान्ति, ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, जड़ता आदि विकार स्पष्टतया पात्रों के चरित्र सृष्टि के माध्यम से रेखांकित हुए हैं।

4· विवेच्य नाटकों में पुरुष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्रों के मनोविकार चित्रित करने में नाटककार का ध्यान अधिक रहा है। और यह भी स्पष्ट दिखायी देता है कि नाटककार नारी मनोविज्ञान के अच्छे पारखी हैं।

5· मनोविकारों को चित्रित करते समय नाटककार का नारी विषयक उदात्त दृष्टिकोण अधिक रहा है। साथ ही साथ मनोविकारों को अभिव्यक्त करते समय नाटककार का मानवतावादी व्यक्तित्व प्रचुर मात्रा में मुखर हो उठा है। मनोविज्ञान की "सामान्य मनोविज्ञान" शाखा के अन्तर्गत इस अध्याय में अनेक विकारों का विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

संदर्भ

1· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ 31, संस्क·अनुल्लेख्य

2· तत्रैव, पृ·90-91

3· तत्रैव, पृ·103-104

4· तत्रैव, पृ·55

5· तत्रैव, पृ·56

6· तत्रैव, पृ·73

7· तत्रैव, पृ·78

8· तत्रैव, पृ·64-65

9· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·84, संस्क·अनुल्लेख्य

10· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर , पृ·25, संस्क·1991

11· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ·27 संस्क·1991

12· तत्रैव, पृ·46

13· तत्रैव, पृ·27

14· तत्रैव, पृ·31

15· तत्रैव, पृ·43

16· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·43, संस्क·1986

17· तत्रैव, पृ·21

18· तत्रैव, पृ·38

19· काव्य परिचय - डॉ·राजेन्द्र प्रसार श्रीवास्तव, पृ·54, संस्क·1978

20· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ·34, संस्क·अनुल्लेख्य

21· तत्रैव, पृ·77

22· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·79, संस्क·1986

23· तत्रैव, पृ·79

24· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ·14, संस्क·1991

25· तत्रैव, पृ·66

26· तत्रैव, पृ·64

27· चिन्तामणि - रामचन्द्र शुक्ल पहला भाग , पृ·8, संस्क·1965

28· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·63, संस्क·1986

29· तत्रैव, पृ·78

30· शब्दार्थ-विचार कोश - आचार्य रामचन्द्र वर्मा, पृ·513, संस्क·1993

31· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ·34, संस्क·अनुल्लेख्य

32· तत्रैव, पृ·39

33· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ·25-26, संस्क·1991

34· चिन्तामणि - रामचन्द्र शुक्ल पहला भाग , पृ·56, संस्क·1965

35· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ·104, संस्क·अनुल्लेख्य

36· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·11, संस्क·1986

37· तत्रैव, पृ·74

38· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ·26, संस्क·1991

39· तत्रैव, पृ·18

40· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ·109-110, संस्क·अनुल्लेख्य

41· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ·29, संस्क·1991

42· चिन्तामणि पहला भाग - रामचन्द्र शुक्ल, पृ·127, संस्क·1965

43· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ·36-37, संस्क·अनुल्लेख्य

44· तत्रैव, पृ·71

45· तत्रैव, पृ·50

46· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·84, संस्क·1986

47· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ·36-37, संस्क·अनुल्लेख्य

48· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ·33, संस्क·1991

49· चिन्तामणि पहला भाग - रामचन्द्र शुक्ल, पृ·107, संस्क·1965

50· टगर - विष्णु प्रभाकर , पृ·72, संस्क·1986

51· चिन्तामणि पहला भाग - रामचन्द्र शुक्ल, पृ·77, संस्क·1965

52· डॉक्टर - विष्णु प्रभाकर, पृ·37, संस्क·अनुल्लेख्य

53· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·14-15, संस्क·1986

54· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·72, संस्क·1986

55· बन्दिनी - विष्णु प्रभाकर, पृ·73, संस्क·1991

56· टगर - विष्णु प्रभाकर, पृ·50, संस्क·1986

57· तत्रैव, पृ·85

--0--